सत्यमेव जयते

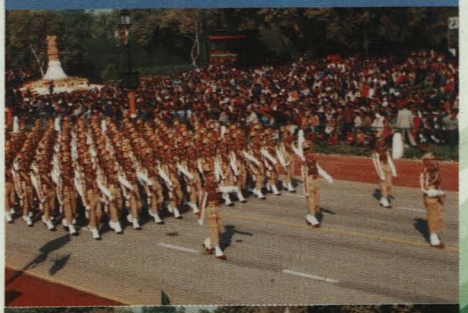

गणतंत्र दिवस परेड

Republic Day Parade

जय हिन्द

26 जनवरी 2008 (माघ 6, शक संवत् 1929)

26 January 2008 (6 Magha, Saka Samvat 1929)

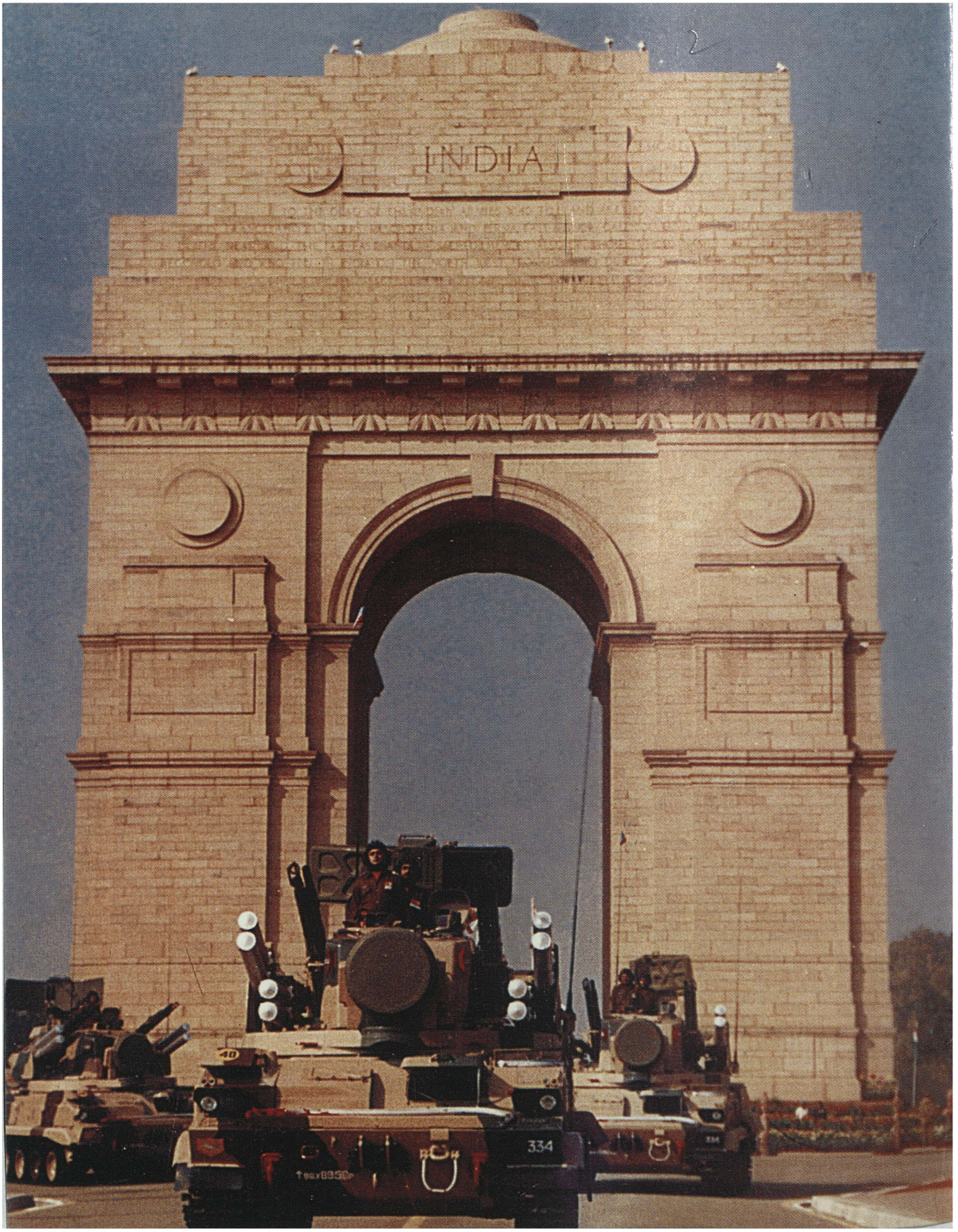
INDIA
334

कार्यक्रम

0957 बजे भारत के राष्ट्रपति का मुख्य अतिथि, फ्रांस गणराज्य के राष्ट्रपति के साथ राजकीय सम्मान सहित आगमन।

प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति और मुख्य अतिथि की अगवानी।

प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति और मुख्य अतिथि से रक्षा मंत्री, रक्षा उत्पादन राज्य मंत्री, रक्षा राज्य मंत्री, तीनों सेनाध्यक्षों और रक्षा सचिव का परिचय।

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और मुख्य अतिथि का मंच की ओर प्रस्थान। प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति तथा मुख्य अतिथि को उनके आसनों की ओर ले जाना।

राष्ट्रीय ध्वज का फहराया जाना। राष्ट्रपति के अंगरक्षकों द्वारा राष्ट्रीय सलामी। बैंड द्वारा राष्ट्रीय गान की प्रस्तुति तथा 21 तोपों की सलामी।

राष्ट्रपति द्वारा अशोक चक्र पुरस्कार प्रदान करना।

गणतंत्र दिवस परेड का शुभारंभ।

सांस्कृतिक प्रस्तुति।

मोटर साइकिल पर करतब।

विमानों द्वारा सलामी।

राष्ट्रपति के अंगरक्षकों द्वारा राष्ट्रीय सलामी।

राष्ट्रपति का मुख्य अतिथि के साथ राजकीय सम्मान सहित प्रस्थान।

Programme

0957 hours The President, accompanied by the Chief Guest, the President of the Republic of France, arrives in State.

The Prime Minister receives the President and the Chief Guest.

The Prime Minister presents to the President and the Chief Guest, the Raksha Mantri, the Raksha Utpadan Rajya Mantri, the Raksha Rajya Mantri, the three Service Chiefs and the Defence Secretary.

The President, the Prime Minister and the Chief Guest proceed to the Rostrum. The Prime Minister escorts the President and the Chief Guest to their seats.

The National Flag is unfurled. The President's Body Guard presents the National Salute. The Band plays the National Anthem and a 21-Gun Salute is fired.

The President presents the Ashoka Chakra awards.

The Republic Day Parade commences.

The Cultural Pageant.

Motorcycle Display.

Fly-past.

The President's Body Guard presents the National Salute.

The President, accompanied by the Chief Guest, departs in State.

परेड–क्रम

भारतीय वायु सेना के हेलिकॉप्टरों द्वारा पुष्प वर्षा

परेड कमांडर
परेड उप–कमांडर
परमवीर चक्र और अशोक चक्र विजेता

सेना

सवार जत्था

61 रिसाला

मैकेनाइज्ड जत्थे

टी–90 टैंक (भीष्म)

टी–72 पुल बिछाने वाला टैंक

155/45 मि.मी. ई–1 (अप गन 130 मि.मी.) सॉल्टम

स्मर्च
मल्टीपल रॉकेट प्रक्षेपण प्रणाली

ब्रह्मोस प्रक्षेपास्त्र प्रणाली

तुंगुस्का हथियार प्रणाली

सर्वत्र पुल

अत्यधिक छोटे छिद्र टर्मिनल के साथ चल नेटवर्क सम्पर्क केंद्र

इन्फैंट्री युद्धक वाहन
बी.एम.पी.-II के

कैरियर मोर्टार ट्रैक

आधुनिक हल्के हेलिकॉप्टरों द्वारा सलामी।

The Order of March

Showering of Flower Petals by IAF Helicopters

Parade Commander
Parade Second-in-Command
Param Vir Chakra and Ashok Chakra Awardees

Army

Mounted Column

61 Cavalry

Mechanised Columns

T-90 Tank (Bhishma)

T-72 Bridge Layer Tank

155/45 mm E-1 (Up Gun 130 mm) Soltum

Smerch
Multiple Rocket Launch System

BrahMos Missile System

Tunguska Weapons System

Sarvatra Bridge

Mobile Network Connect Centre (NETCONC) alongwith Very Small Aperture Terminal (VSAT)

Infantry Combat Vehicle (ICV)
BMP-II K

Carrier Mortar Track

Fly Past by Advanced Light Helicopters

मार्च करती हुई टुकड़ियां

पंजाब रेजिमेंट

पंजाब रेजिमेंटल सेंटर
आर्टिलरी सेंटर } बैंड धुन 'देशों का सरताज भारत'

ग्रेनेडियर्स

राजपूताना राइफल्स रेजिमेंट

वायु रक्षा तोपखाना
गार्ड रेजिमेंटल सेंटर } बैंड धुन 'अमर सेनानी'

सिख लाइट इन्फैंट्री रेजिमेंट

असम रेजिमेंट

असम रेजिमेंटल सेंटर
महार रेजिमेंटल सेंटर } बैंड धुन 'हसते लुसाई'

महार रेजिमेंट

58 गोरखा ट्रेनिंग सेंटर

पारा रेजिमेंटल सेंटर
राजपूताना रेजिमेंटल सेंटर } बैंड धुन 'भोपाल'

प्रादेशिक सेना

नौसेना

नौसेना ब्रास बैंड
मार्च करती हुई टुकड़ी } बैंड धुन 'जय भारती'

झांकी : 'भारतीय नौसेना–पेशेवर टीम–गौरवशाली सेना'

Marching Contingents

The Punjab Regiment

The Punjab Regimental Centre
The Artillery Centre } Band playing 'Deshon Ka Sartaj Bharat'

The Grenadiers

The Rajputana Rifles Regiment

The Air Defence Artillery
The Guard Regimental Centre } Band playing 'Amar Senani'

The Sikh Light Infantry Regiment

The Assam Regiment

The Assam Regimental Centre
The Mahar Regimental Centre } Band playing 'Haste Lushai'

The Mahar Regiment

The 58 Gorkha Training Centre

The PARA Regimental Centre
The Rajputana Regimental Centre } Band playing 'Bhopal'

The Territorial Army

Navy

Naval Brass Band
Marching Contingent } Band playing 'Jai Bharti'

Tableau : "Indian Navy – Professional Team – Proud Force"

वायु सेना

वायु सेना बैंड : बैंड धुन 'टाइगर हिल'
मार्च करती हुई टुकड़ी

झांकी : i) वायुसेना योद्धाओं के चित्र
ii) 80 दिन में विश्व भ्रमण

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन–उपस्कर जत्थे

झांकी : ब्रह्मोस प्रक्षेपास्त्र (नौसेना संरूपण–पनडुब्बी आधारित)

एक्स टैंक

एनबीसी टोही वाहन

झांकी : पनडुब्बीरोधी युद्ध पद्धति

धनुष प्रक्षेपास्त्र

अग्नि–III प्रक्षेपास्त्र

पूर्व सैनिक

बिहार रेजिमेंटल सेंटर
ए. एम. सी. सेंटर एवं स्कूल } बैंड धुन 'कदम–कदम बढ़ाए जा'

पूर्व सैनिकों की मार्च करती हुई टुकड़ी

अर्द्ध–सैन्य तथा अन्य सहायक सिविल बल

सीमा सुरक्षा बल : बैंड धुन 'विजय भारत'
सीमा सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

सीमा सुरक्षा बल के ऊंटों की टुकड़ी
सीमा सुरक्षा बल के ऊंट : बैंड धुन 'हम हैं सीमा सुरक्षा बल'

असम राइफल्स की मार्च करती हुई टुकड़ी
असम राइफल्स : बैंड धुन 'असम राइफल्स का गीत'

तटरक्षक बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल : बैंड धुन 'सेवा भक्ति का यह प्रतीक'
केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

Air Force

Air Force Band : Band playing
Marching Contingent 'Tiger Hills'

Tableau : i) Portray of Air warriors
ii) Around the World in 80 days

DRDO Equipment Columns

Tableau : BrahMos Missile (Naval Version – Submarine based)

Ex-Tank

NBC Recce Vehicle

Tableau : Anti-Submarine Warfare

Dhanush Missile

Agni-III Missile

Ex-Servicemen

The Bihar Regimental Centre
The AMC Centre and School } Band playing 'Kadam- Kadam Badhaye Ja'

Ex-Servicemen Marching Contingent

Para-Military and Other Auxiliary Civil Forces

Border Security Force (BSF) : Band playing
BSF Marching Contingent 'Vijay Bharat'

BSF Camel Contingent
BSF Camel : Band playing 'Hum Hain Seema Suraksha Bal'

Assam Rifles Marching Contingent
Assam Rifles : Band playing 'Assam Rifles' Songs'

Coast Guard Marching Contingent

Central Reserve Police Force (CRPF) : Band playing 'Seva Bhakti Ka Yeh Prateek'

CRPF Marching Contingent

7

भारत–तिब्बत सीमा पुलिस : बैंड धुन 'हम सरहद के सेनानी'
भारत–तिब्बत सीमा पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी

Indo-Tibetan Border Police (ITBP) : Band playing 'Hum Sarhad Ke Senani'
ITBP Marching Contingent

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल : बैंड धुन 'कदम–कदम बढ़ाए जा'
केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

Central Industrial Security Force (CISF) : Band playing 'Kadam-Kadam Badhaye Ja'
CISF Marching Contingent

सशस्त्र सेना बल : बैंड धुन 'जोश भरा है सीने में'
सशस्त्र सेना बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

Sashastra Sena Bal (SSB) : Band playing 'Josh Bhara Hai Sine Main'
SSB Marching Contingent

रेलवे सुरक्षा बल : बैंड धुन 'विजय भारत'
रेलवे सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

Railway Protection Force (RPF) : Band playing 'Vijay Bharat'
RPF Marching Contingent

दिल्ली पुलिस : बैंड धुन 'दिल्ली पुलिस'
दिल्ली पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी

Delhi Police : Band playing 'Delhi Police'
Delhi Police Marching Contingent

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.)

National Cadet Corps (NCC)

एन.सी.सी. के बालक : बैंड धुन 'ऐ वतन ऐ वतन'
सीनियर डिवीजन के बालकों की मार्च करती हुई टुकड़ी

NCC Boys : Band playing 'Aye Watan Aye Watan'
Senior Division Boys' Marching Contingent

एन.सी.सी. की बालिकाएं : बैंड धुन 'सारे जहां से अच्छा'
सीनियर डिवीजन की बालिकाओं की मार्च करती हुई टुकड़ी

NCC Girls : Band playing 'Sare Jahan Se Achchha'
Senior Division Girls' Marching Contingent

राष्ट्रीय सेवा योजना

National Service Scheme (NSS)

सामूहिक पाइप और ड्रम : बैंड धुन 'पाइपर केव'
राष्ट्रीय सेवा योजना की मार्च करती हुई टुकड़ी

Mass Pipes and Drums : Band playing 'Piper Cave'
NSS's Marching Contingent

सांस्कृतिक प्रस्तुति

The Cultural Pageant

झांकियां : छब्बीस

Tableaux : Twenty Six

हाथियों पर सवार राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता बच्चे

National Bravery Award Winning Children on Elephants

बच्चों की प्रस्तुति

दिल्ली स्कूलों के बालक और बालिकाएं
बैंड धुन 'सूर्य'
ध्वज वाहक बालक और बालिकाएं

स्कूली बच्चों की प्रस्तुतियाँ : छः

तिरंगा साक्षी है
वांग्ला नृत्य
गौरव
लाम्बडी
सरफरोशी की तमन्ना
गौर माड़िया

मोटर साइकलों पर करतब : सीमा सुरक्षा बल

वायुयानों द्वारा सलामी*

गुब्बारे उड़ाना : भारतीय मौसम विज्ञान विभाग।

*मौसम अनुकूल रहने पर।

Children's Pageant

Boys and Girls from Delhi Schools
Band playing : 'Surya'
Flag Bearers Boys and Girls

School Children Items : Six

Tiranga Sakshi Hai
Wangala Dance
Gaurav
Lambadi
Sarfaroshi Ki Tamanna
Gour Maria

Motorcycle Display : Border Security Force

Fly-Past*

Release of balloons : Indian Meteorological Department.

**If weather conditions permit.*

सांस्कृतिक प्रस्तुति

आज, भारत अपना 59वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। यह सांस्कृतिक प्रस्तुति, हमारी सभ्यता, सांस्कृतिक विविधता और भारत के गौरवशाली अतीत की प्रतीकात्मक प्रगति की एक झलक प्रस्तुत करती है तथा समृद्ध और खुशहाल भविष्य के प्रति नागरिकों के दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करती है। 2007 में भारत की आज़ादी के 60 वर्ष पूरे होने पर, उसे मनाने के लिए 'स्वतंत्रता की भावना' की अन्तर्निहित विषयवस्तु वाली झांकियां भी सांस्कृतिक प्रस्तुति में शामिल की गई हैं।

पंक्तिबद्ध रंग–बिरंगी झांकियों में भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा प्रौद्योगिकीय पहलुओं का चित्रण किया गया है। हमारी प्राकृतिक छटाओं तथा वास्तुशिल्पीय धरोहर का सौंदर्य इन झांकियों का आकर्षण है।

CULTURAL PAGEANT

Today, India is celebrating the 59th Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of our ancient civilisation, cultural diversity and progress symbolising India's glorious past and reflects the citizens' aspirations for a prosperous and happy tomorrow. To mark the completion of 60 years of India's independence in 2007, tableaux with the underlying theme of "Spirit of freedom" have also been included in the cultural pageant.

The array of colourful tableaux depicts the social, cultural, economic and technological facets of India. These tableaux capture the beauty of our landscape and architectural heritage.

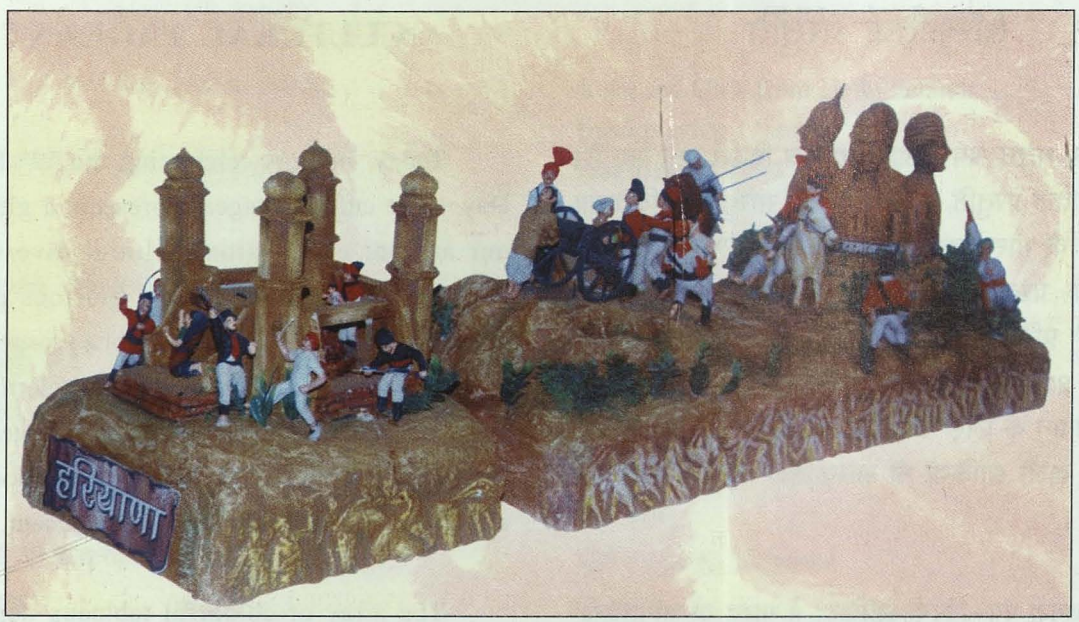

1857 - स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान

हरियाणा का इतिहास इसके बहादुर, समर्पित और स्वाभिमानी लोगों के संघर्ष की महान गाथा है। हरियाणा के लोगों ने अति प्राचीन काल से आक्रांताओं और शत्रुओं के साथ लड़ते हुए असाधारण और अडिग साहस का परिचय दिया है। हरियाणा की झांकी में इसके लोगों द्वारा दिए गए बलिदानों की गौरवपूर्ण गाथा है। भारत की स्वतंत्रता के पहले युद्ध–1857 के दौरान हरियाणा के लोगों द्वारा किया गया बलिदान उनकी बहादुरी और साहस की परंपराओं का प्रतीक है।

झांकी के पहले भाग में ब्रिटिश सेना के आक्रमण से अपनी जान बचाने के लिए कुएं में कूदती हुई हजारों महिलाओं और बच्चों के हृदयविदारक दृश्य का चित्रण किया गया है जिसने हिसार जिले में उनके गांव रोहनात को पूरी तरह नष्ट कर दिया था। झांकी के पिछले भाग में ब्रिटिश सेना द्वारा तोपों से उड़ाए जा रहे क्रांतिकारियों सहित स्वतंत्रता संघर्ष के विभिन्न दृश्य प्रस्तुत किए गए हैं। भारत की स्वतंत्रता के पहले युद्ध के चार महान योद्धाओं–राजा नाहर सिंह, राव तुला राम, अब्दुर रहमान खाँ और लाला हुकम चंद जैन की आदम कद से भी बड़ी मूर्तियां झांकी के पिछले भाग में प्रदर्शित की गई हैं।

1857 – Contribution in the Freedom Struggle

The history of Haryana is a great saga of struggle of its brave, dedicated and self-respecting people. From time immemorial, the people of Haryana have displayed exemplary and indomitable courage while fighting invaders and foes. The tableau of Haryana depicts the glorious saga of sacrifices made by its people. The sacrifices made by the people of Haryana during the First War of India's Independence – 1857 are symbolic of their traditions of bravery and courage.

The first part of the tableau illustrates the heartrending scene of thousands of women and children jumping in a well in a bid to save their lives from the attacking British army who had completely destroyed their village, Rohnat in Hissar district. In the rear part of the tableau, there are various scenes of freedom struggle including revolutionaries being blown off by canons by the British army. Larger-than-life statues of four great warriors of the First War of India's Independence – Raja Nahar Singh, Rao Tula Ram, Abdur Rahman Khan and Lala Hukam Chand Jain are also depicted in the rear part of the tableau.

11

बाथूकम्मा - उपासना का उत्सव

आंध्र प्रदेश के संपूर्ण तेलंगाना क्षेत्र का अत्यंत भव्य और अनूठा उत्सव 'बाथूकम्मा' दशहरा के समय धूमधाम और उल्लास के साथ मनाया जाता है जो फसल कटाई के समय पड़ता है। बाथूकम्मा उत्सव के अवसर पर प्रत्येक मां अपनी पुत्रियों को अपने घर बुलाती हैं और नए–नए वस्त्र और आभूषण देकर उन्हें दीर्घायु होने का आशीर्वाद देती हैं। ये सभी पुत्रियां अपनी–अपनी बाथूकम्मा मूर्तियों में, जो बड़ी शंकु आकार की मूर्ति है जो घास से बनाई और चारों ओर से भिन्न–भिन्न किस्म के फूलों से सजाई जाती है, माँ लक्ष्मी देवी और गौरी देवी का आह्वान करती हैं। यह उत्सव उदार प्रकृति की अर्चना, हरी–भरी फसलों से लहलहाते खेतों और सभी पुष्पित एवं पल्लवित पौधों का प्रतीक है। उत्सव के अंत में मूर्ति को समीप के तालाबों अथवा नदियों में विसर्जित कर दिया जाता है।

आंध्र प्रदेश की झांकी में माँ लक्ष्मी देवी और गौरी देवी की दिव्य शक्ति का गुणगान करते हुए महिलाएं इस उत्सव की एक झलक दिखा रही हैं और समूह में बाथूकम्मा मूर्ति के चारों ओर नृत्य कर रही हैं।

आंध्र प्रदेश

Bathukamma – A Festival of Devotion

'Bathukamma', the most spectacular and unique festival of the entire Telangana region in the state of Andhra Pradesh, is celebrated with pomp and gaiety during Dassera season, coinciding with the harvest period. On the occasion of Bathukamma festival, every mother invites her daughters to native place and honours them with new clothes and ornaments and blesses them with longevity. All those daughters invoke Goddess Laxmidevi and Gowridevi into their Bathukamma idols, - a big cone-shaped idol made of grass flowers and decorated with different kinds of flowers around it. This festival symbolises worshipping the bountiful nature, fields with lush green crops, and all flowering plants in full blossom. At the end of the festival, the idol is immersed in nearby tanks or rivers.

The tableau of Andhra Pradesh gives a glimpse of the festival marked by the womenfolk singing songs in praise of the divine power of the Goddesses Lakshmidevi and Gowridevi, and dancing in groups around Bathukamma idol.

Andhra Pradesh

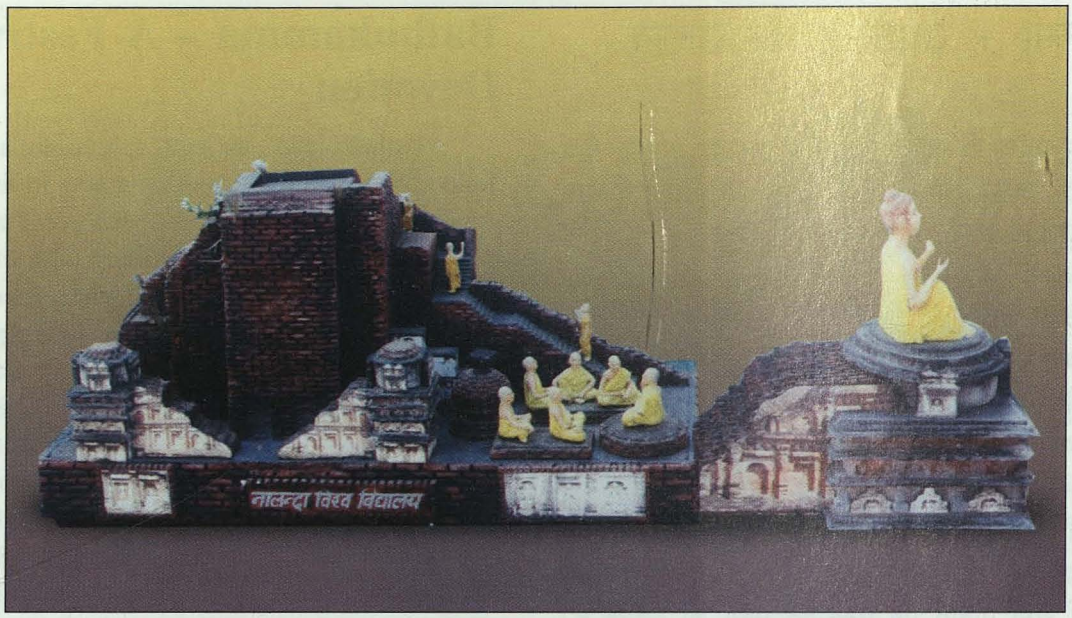

नालंदा महाविहार

सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक तथा बौद्धिक क्षेत्रों में अपने महान योगदान के लिए बिहार प्रसिद्ध है। शिक्षा के क्षेत्र में भी अपने असाधारण कार्य के लिए सुविख्यात है। नालंदा महाविहार प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति के बेहतरीन उदाहरणों में से एक है। नालंदा महाविहार के शिलान्यास के पश्चात यह और अधिक ख्यातिप्राप्त हो गाय। तत्कालीन स्नातकोत्तर तथा अनुसंधानोन्मुखी आवासीय विश्वविद्यालय के खंडहर, आधुनिक बिहार की राजधानी पटना के दक्षिण–पूर्व में लगभग 90 किलोमीटर के क्षेत्र में फैले हुए हैं। आठ शताब्दियों तक सर्वोच्च विद्यापीठ होने का गौरव प्राप्त नालंदा का इतिहास भगवान बुद्ध तथा तीर्थंकर महावीर के समय की याद दिलाता है। वेदों, ब्राह्मणों, बुद्ध की शिक्षाओं, दर्शन, कला और विज्ञान के अलावा आध्यात्मिक विज्ञान, वास्तुकला, मूर्तिकला, गणित, तर्कशास्त्र, खगोलविद्या, ज्योतिष विद्या तथा चिकित्सा शास्त्रों का भी अध्ययन तथा अध्यापन किया जाता था।

बिहार की झांकी में विश्व के सबसे प्राचीन महाविद्यालयों में से एक नालंदा महाविहार की अद्वितीय गरिमा का चित्रण किया गया है।

बिहार

Nalanda Mahavihar

The State of Bihar's has immensely contributed in the spheres of culture, religion, politics and knowledge. Bihar is also known for its great success in the field of education. Nalanda Mahavihar is one of the finest examples of ancient Indian education system. It became more glorious after the foundation stone of Nalanda Mahavihar was laid. The ruins of erstwhile post-graduate and research-oriented residential university lie about 90 kilometres south-east of Patna, the capital of modern Bihar. Remaining the highest seat of learning for about eight centuries, Nalanda's history goes back to the days of Lord Buddha and Tirthankar Mahavira. Apart from Vedas, Brahmanas, Puranas, Buddhist treatise, philosophy, arts and sciences, subjects like spiritual sciences, architecture, sculpture, mathematics, logic, astronomy, astrology and medical sciences were also studied and taught.

The tableau of Bihar showcases the unique glory of Nalanda Mahavihar one of the oldest universities of the world.

Bihar

13

कश्मीर का कुमुदनी बाग

"भूमि पर स्वर्ग" कश्मीर को इसके प्राकृतिक दृश्य, हरी–भरी घाटियों, कल–कल करते झरनों, बर्फ से ढके पहाड़ों, फूलों और फलों, लोक संगीत और परंपरागत नृत्य के लिए जाना जाता है। मुगल बाग के अलावा कश्मीर अपने खूबसूरत जंगली फूलों–"डहेलिया" अथवा "पैंसी", जिनियास अथवा कमल के लिए भी प्रसिद्ध है। कश्मीर में कुमुदनी बाग होना गर्व की बात है जो शायद देश में एक ही है। अनेक रंगों और किस्मों के कुमुदनी वसंत ऋतु में भरपूर फूलते हैं। यह अद्‌भुत बाग "चश्मेशाही" के परिसर में श्रीनगर के विशाल पहाड़ों के नीचे अवस्थित है जिसकी प्राकृतिक छटा प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करती है।

जम्मू–कश्मीर की झांकी में कश्मीर का कुमुदनी बाग प्रस्तुत है। एक कश्मीरी महिला और कुमुदनी बाग का प्रतीक बड़े आकार की मूर्तिकला दर्शाई गई है जिसके पीछे सुविख्यात "चश्मेशाही"के साथ भिन्न–भिन्न मनमोहक रंगों में कुमुदनी की कतारें हैं। पर्यटकों को इस गार्डन के प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते हुए दर्शाया गया है जो "रबाब" और "संतूर" पर बजाए जा रहे कश्मीरी लोक संगीत को सुन रहे हैं।

जम्मू–कश्मीर

Tulips Garden in Kashmir

Kashmir the 'Paradise on Earth' is known for its landscape, lush green valleys, sparkling streams, snow capped mountains, flowers & fruits, folk music and traditional dance. Besides Mughal gardens, Kashmir is also famous for its charming wild flowers – be it 'Dahlias' or 'Pansies', Zinnias or lotus. Kashmir is proud of having a Tulip garden, which probably is the only one in the country. Tulips of many colours and variety are in full bloom during the spring season. This amazing garden is situated below the colossal mountains in Srinagar in the premises of 'Chasmashahi', the natural beauty of which attracts scores of tourists every year.

The tableau of Jammu and Kashmir presents the Tulip garden of Kashmir. A Kasmiri lady and a large sized sculpture symbolic of Tulip garden are shown followed by rows of tulips in different fascinating colours with the well known 'Chasmashahi'. Tourists are shown enjoying the scenic beauty of the garden and listening to Kashmiri folk music being played on 'rabab' and 'santoor'.

Jammu and Kashmir

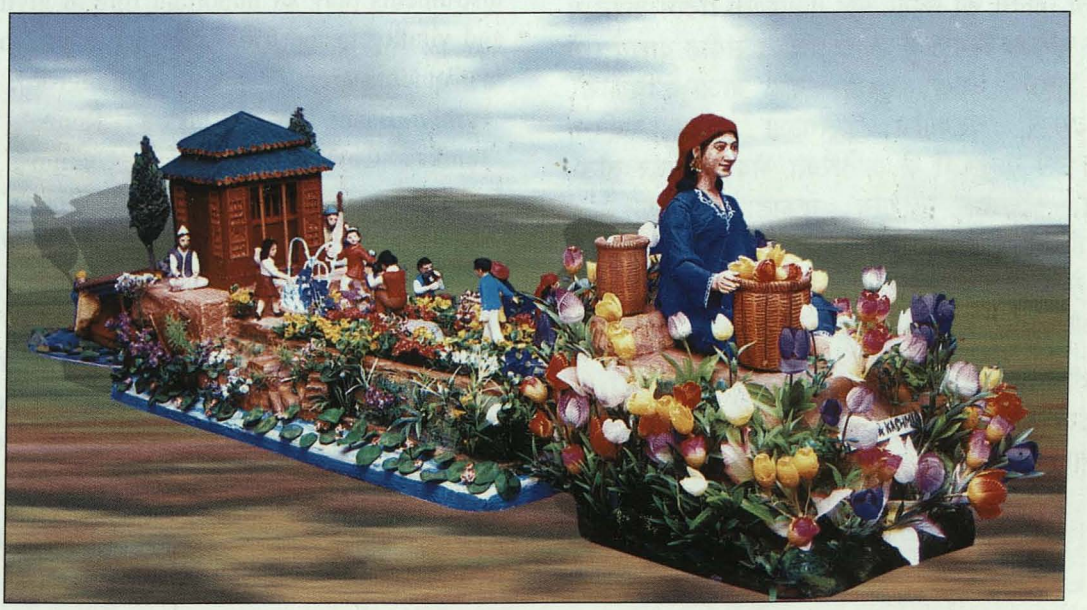

छत्तीसगढ़ के लोक वाद्य यंत्र

छत्तीसगढ़, की अनेक सांस्कृतिक विविधताओं में से एक लोक संगीत वाद्ययंत्र और लोक नृत्य है। छत्तीसगढ़ ही शायद केवल एक ऐसा जनजातीय क्षेत्र है जहां विविधता भरे वाद्ययंत्र प्रयोग में लाए जाते हैं। ये संगीत वाद्ययंत्र जनजातीय जीवन को ऊर्जा और तेजस्विता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कुछ प्राचीन संगीत वाद्ययंत्र में 'ढंकुल', 'घुंघरू', 'ढांक', 'तुरही', 'बांस बाजा', 'चिकारा', 'रोंजो', 'टमकी', 'चटकोला', 'अलगोजा', 'गुडुम', 'मादिया ढोल' हैं। इन वाद्ययंत्रों के अतिरिक्त 'भेवड़', 'मंदर तॉड', 'नकदेवन', 'हिरनांग', 'निशान', 'ढफाडा', 'थडका' अन्य वाद्ययंत्र हैं जो आम तौर पर छत्तीसगढ़ में लोक वाद्ययंत्रों के रूप में प्रयोग में लाए जाते हैं। ये सभी यंत्र अनूठे आकार और आकृति के हैं।

छत्तीसगढ़ की झांकी में विविध लोक वाद्ययंत्रों को दर्शाया गया है जो छत्तीसगढ़ को एक विशिष्ट एकात्मकता और पहचान देते हैं।

छत्तीसगढ़

Folk Instruments of Chhattisgarh

One of the many cultural diversities of Chhattisgarh is folk (musical) instruments and folk dance. Chhattisgarh perhaps is the only tribal region where varieties of instruments are used. These musical instruments play an important role in giving energy and vitality to the tribal life. Some ancient musical instruments are: 'Dhankul', 'Ghungroo', 'Dhonk', 'Turhi', 'Baans Baja', 'Chikara', 'Ronzo', 'Danhak', 'Temki', 'Chatkola', 'Algoja', 'Gudum', 'Maadiya Dhol'. Apart from these instruments 'Bhewr', 'Mandar Tod', 'Nakdevan', 'Hirnang', 'Nishan', 'Dhaphada', 'Thadka' are the other instruments which are popularly used as folk instruments in Chhattisgarh. All these instruments have a unique shape and appearance.

The tableau of Chhattisgarh depicts the varieties of folk instruments which give a special identity and recognition to Chhattisgarh.

Chhattisgarh

15

जात्रा भगत और ताना आंदोलन

बहुत समय पहले बीसवीं सदी के शुरू में जब संपूर्ण औपनिवेशिक शक्तियों, जिनका अन्यायी शासन भारतीयों के प्रति अत्यधिक अत्याचार करने पर उतारू था, के विरूद्ध सम्पूर्ण राष्ट्र लगातार युद्ध लड़ रहा था, उस समय एक अनूठा आंदोलन, हालांकि यह देखने में साधारण परंतु आंतरिक रूप से मजबूत था, आज के झारखंड के पूर्वी पठारी क्षेत्र में अवस्थित भारत के एक अज्ञात गांव में पनप रहा था। इस आंदोलन को भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास–वृत्तों में "ताना भगत" आंदोलन के रूप में जाना जाता है। दूसरा आंदोलन जात्रा ने शुरू किया था जो स्वतंत्रता सेनानियों में सबसे अग्रणियों में से एक थे जिन्होंने सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत की महता की खोज की थी।

झारखंड की इस झांकी में जात्रा और ताना भगत आंदोलन का चित्रण है जिसका लक्ष्य अहिंसक साधनों के जरिए ब्रिटिश शासन को जड़ से उखाड़ फेंकने पर केन्द्रित है। जहां तक स्वतंत्रता के भारतीय युद्ध के इतिहास का संबध है, ताना भगत आंदोलन स्वतंत्रता संघर्ष को आगे बढ़ाने के कारण के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

Jatra Bhagat and Tana Movement

Way back in the early twentieth century, when the entire nation was waging a relentless war against the colonial powers, whose unjust rule had perpetrated innumerable atrocities on the Indians, a unique movement, though simple in appearance but inherently strong in character, was jostling up in a nondescript village of India – located in the eastern plateau region the present day Jharkhand. The movement is known as 'Tana Bhagat' movement in the annals of Indian freedom struggle. Another movement was started by Jatra, one of the first among the freedom fighters who discovered the worth of simple living and high thinking.

The tableau of Jharkhand presents the Jatra and Tana Bhagat movements which aimed at uprooting the British rule through non violent means. The Tana Bhagat movement in pushing forth the cause of freedom struggle occupies an important place in the history of Indian war of Independence.

झारखंड ***Jharkhand***

ओणम

ओणम केरल का राज्यस्तरीय त्यौहार है। यह समता, समृद्धि और सम्पन्नता का त्यौहार है। इस त्यौहार का महत्व इसकी धर्मनिरपेक्ष प्रकृति है। सभी केरलवासी चाहे वे किसी भी धर्म, जाति, पंथ के हों या वैभव सम्पन्न हों, इस त्यौहार को मनाते हैं। ओणम की उत्पत्ति एक पौराणिक कथा से मानी जाती है जोकि पूर्व काल में शान्ति और खुशहाली के समय में मधुर स्मृतियों के बारे में है जब असुरों का एक प्रख्यात राजा महाबली इस भूमि पर राज करता था।

केरल की यह झांकी इस अवसर के आकर्षण और रंगारंग होने के साथ–साथ इसकी धर्मनिरपेक्ष प्रकृति को चित्रित करती है। अग्रभाग पर राजा मवेली इस झांकी का नेतृत्व करते हुए दर्शाए गए हैं। अग्रभाग में मवेली केरल के परंपरागत खुशहाली के प्रतीकों द्वारा घिरा हुआ है। यहां चित्रित की गई पक्षी नौका ('आर्यन्ना थोनी' नौका) 'अरनामुला नौका प्रतियोगिता' से पूर्व होने वाले जुलूस में प्रयोग में लाई जाती है जोकि ओणम त्यौहार के एक भाग के रूप में आयोजित की जाती है।

केरल

Onam

'Onam' is the State festival of Kerala. It is the festival of equality, richness and well being. The significance of this festival is its secular nature. All Keralites irrespective of religion, cast or creed celebrate this occasion. The genesis of 'onam' may be traced to a myth which is about the sweet memories of the period of peace and prosperity in the distant past when Mahabali a celebrated emperor of the 'Asuras' ruled over this land.

The tableau of Kerala depicts the charm and the colourfulness of the occasion as well as its secular nature. King Maveli is shown leading the pageant. The Maveli figure is surrounded by the traditional prosperity symbols of Kerala. The bird boat called 'Arayanna Thoni' Boat shown in the tableau is the one used in the procession held prior to 'Aranamula Boat Race' which is organized as part of onam festivities.

Kerala

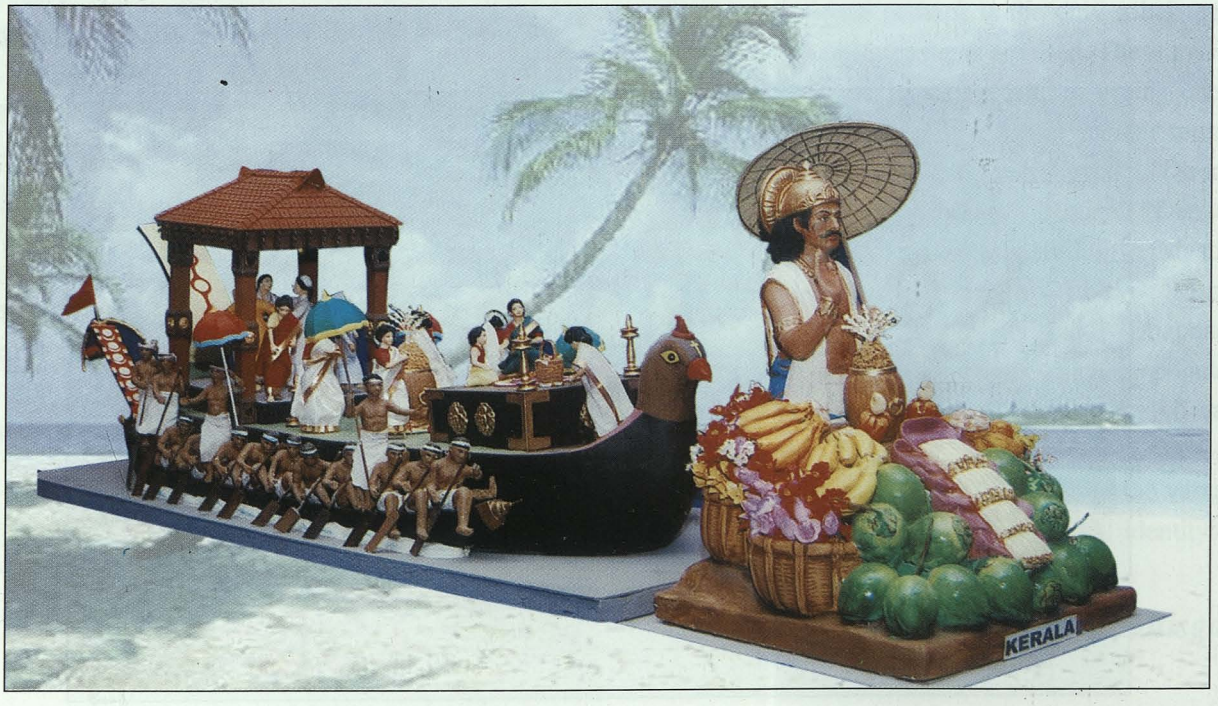

17

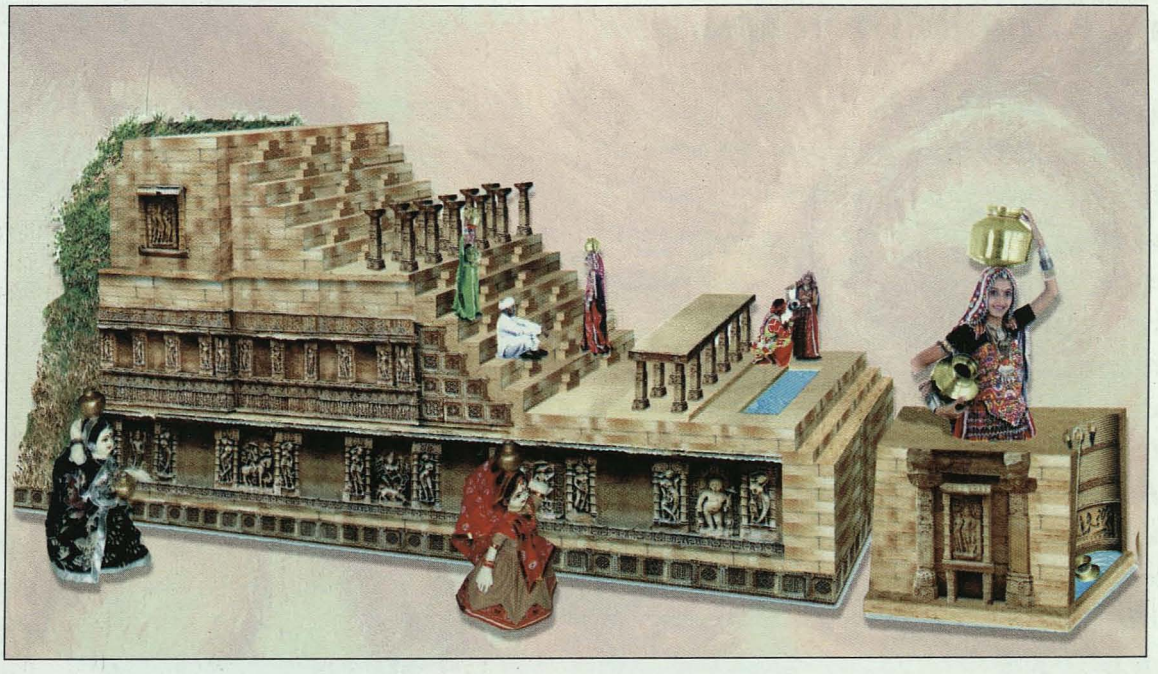

गुजरात के सीढ़ीनुमा कुएं

सीढ़ीनुमा कुआं अथवा 'वाव' कर्मकाण्डों के साथ–साथ उपयोगितावादी भी है तथा दोनों ही आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। आस–पास के गांवों के लोग इन कुओं से पानी ले जाते थे और इन्हें पवित्र मानते थे। गुजरात की अर्द्ध–शुष्क जलवायु में वाव का शीतल जल विशेषकर कड़ी गर्मी के महीनों में अत्यंत राहत पहुंचाता था। वाव के जल का उपयोग सिंचाई के लिए भी किया जाता था। सीढ़ीनुमा कुएं का उपयोग आराम के लिए ठंडा स्थान उपलब्ध कराने और भगवान की प्रार्थना करने के लिए भी किया जाता था। जैसे–जैसे सीढ़ियों द्वारा हम प्रत्येक तल पर नीचे जाते हैं तो हर ओर उत्कृष्ट उत्कीर्णित खिड़कियां तथा मूर्तिकला नजर आती हैं। ये मूर्तियां दशावतारों अर्थात विष्णु के दस अवतारों को दर्शाती हैं।

गुजरात की यह झांकी, गुजरात के सीढ़ीनुमा कुएं अत्यंत बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन अर्थात् जल के संरक्षण हेतु प्राचीन प्रौद्योगिकी तथा उपयोगिता में किफायत के महत्व को प्रदर्शित कर रही है।

गुजरात

Step Wells of Gujarat

The Step Well or 'Vav' served both ritualistic as well as utilitarian needs. People from the nearby villages used to take water from the well and considered it holy. In the semi-arid climate of Gujarat, the cool water from the Vav provided a welcome break, particularly in the harsh summer months. Water from the Vav was also used for irrigation. The Step Well also served as a cool place to take rest and to offer prayers to the lord. As one goes down each floor through the steps, there are exquisitely carved windows and sculptures on either side. The sculptors depict the 'Dashavtars', the ten incarnations of Lord Vishnu.

The tableau of Gujarat depicts the Step Wells of Gujarat signifying the ancient technology of conservation and economy in utilization of the most precious natural resource i.e. water.

Gujarat

तितलियां

"मेघों की भूमि" मेघालय तितलियों की अनेक उत्तम किस्मों से भरा पड़ा है। ये तितलियां सुंदर दिखती हैं और उन्हें पहाड़ियों, विस्तृत घाटियों, बागों, जंगलों और कलकल करते झरनों और सुमधुर जल प्रपातों के आसपास के क्षेत्रों में उनके पूर्ण वैभव में देखा जाता है। तितलियों की किस्मों से भी मेघालय को "तितलियों की भूमि" की उपाधि मिली हुई है। तितलियां पारिस्थितिकी की स्थिति के वातसूचक के रूप में कार्य करती हैं और तितलियों की उचित संख्या में उपस्थिति से परिस्थितिकी की स्थिति का संकेत मिलता है। राज्य में तितलियों की कुछ विशिष्ट किस्मों में "ब्लैक फोरेस्टर", "डस्की लेबिरिंथ", "द ग्रेट ईवनिंग ब्राउन", "द कॉमन टाइगर" हैं।

मेघालय की इस झांकी में राज्य में पाई जाने वाली तितलियों की विशिष्ट किस्मों का चित्रण है।

मेघालय

Butterflies

Meghalaya, "the land of the clouds" abounds in many exquisite varieties of butterflies. These butterflies are a treat to the eyes and they are seen in all their splendour in the hills, dales, gardens, forests and surrounding areas of murmuring steams and silvery cascades. The variety of butterflies has also earned Meghalaya the epithet – 'Land of Butterflies'. Butterflies act as weathercock of the condition of ecology and the presence of a fair number of butterflies indicates the health of an ecosystem. Some of the exotic varieties of the butterflies available in the state are: 'Black Forester', 'Dusky Labyrinth', 'The Great Evening Brown', 'The Common Tiger'.

The tableau of Meghalaya depicts the exotic varieties of butterflies found in the State.

Meghalaya

19

खांपटी संस्कृति की झलकियाँ

बहु–मानवजातीय आदिवासी राज्य अरुणाचल प्रदेश अपने विभिन्नता भरे और मनमोहक उत्सवों के लिए प्रसिद्ध है। सांस्कृतिक रूप से अत्यंत समृद्ध "खांपटी" आदिवासियों की अपनी एक लिखित लिपि और उनकी अपनी भाषा है। वे बौद्ध धर्मावलंबी और 'थेरवाद संप्रदाय' (बुद्धवाद के दक्षिणी स्कूल) के अनुयायी हैं। बिना मठ (बौद्ध मंदिर) के किसी खांपटी गांव की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। बौद्ध मतावलंबी होने के नाते उनके सभी त्यौहार और परंपराएं भगवान बुद्ध की शिक्षाओं से जुड़े हुए हैं। नये वर्ष का त्यौहार, 'संगकेन' अप्रैल के महीने में मनाया जाता है जो तीन महीने के बारिश के मौसम की समाप्ति के बाद जलोत्सव के रूप में जाना जाता है। नृत्य विभिन्न क्षेत्रों में उनके कौशल की अभिव्यक्तियां हैं। खांपटी अच्छे योद्धा हैं और युद्ध कला में भी माहिर हैं।

अरुणाचल प्रदेश की झांकी खांपटी संस्कृति के सभी रंगों की एक झलक प्रस्तुत करती है।

अरुणाचल प्रदेश

Glimpses of Khampti Culture

A State of multi ethnic tribes, Arunachal Pradesh is famous for its varied and colourful festivals. The 'Khamptis', culturally a very rich tribe, have a written script and a language of their own. Buddhist by religion, they follow the 'Theravada Sect' (Southern School of Buddhism). One cannot think of a Khampti village without a monastery (Buddhist Temple). Being devout Buddhists, all of their festivals and rituals are associated with the teachings of Lord Buddha. The New Year festival, the 'Sangken' celebrated in the month of April popularly known as water festival after completion of three months' rainy retreat, are some of these occasions. The dances are manifestation of their skill in various fields. The Khamptis are also good warriors and expert in martial arts.

The tableau of Arunachal Pradesh presents a glimpse of Khampti culture in all its hues and colours.

Arunachal Pradesh

शहीद भगत सिंह

एक क्रांतिकारी, एक सम्मानित शहीद और भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के प्रख्यात नामों में से एक भगत सिंह को शहीद भगत सिंह के नाम से जाना जाता है (शहीद शब्द का अंग्रेजी अर्थ है "मार्टयर")। अनेक क्रांतिकारी संगठनों में शामिल भगत सिंह का जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ था जिसका संबंध पहले से भारत में ब्रिटिश राज के विरुद्ध क्रांतिकारी गतिविधियों से था। भगतसिंह को उस समय समर्थन मिला जब उन्होंने भारतीय और ब्रिटिश राजनीतिक बंदियों के लिए समान अधिकार की मांग करते हुए जेल में 63 दिन का अनशन रखा। उन्हें 8 अप्रैल, 1929 को विधानसभा में बम फेंकने और उस पुलिस अधिकारी को गोली मारने पर फांसी दे दी गई थी जिसने अनुभवी वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी और सामाजिक कार्यकर्ता लाला लाजपत राय की हत्या की थी। उनकी विरासत से भारत के युवक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित हुए।

पंजाब की झांकी शहीद भगत सिंह के जन्म शताब्दी वर्ष पर मातृभूमि के इस महान शहीद को उपयुक्त श्रद्धांजलि है।

Shaheed Bhagat Singh

Bhagat Singh, a revolutionary, a venerated martyr and one of the most prominent faces of the Indian freedom struggle, is called as Shaheed Bhagat Singh (the word "Saheed" means the "martyr"). Born to a family which had earlier been involved with revolutionary activities against the British Raj in India, Bhagat Singh became involved in numerous revolutionary organisations. Bhagat Singh gained support when he underwent a 63 day fast in jail, demanding equal rights for Indian and British political prisoners. He was hanged for throwing a bomb in the Legislative Assembly on 8th April, 1929 and also for shooting a police officer in retaliation to the killing of veteran freedom fighter and social activist Lala Lajpat Rai. His legacy inspired the youth in India to join Indian freedom movement.

The tableau of Punjab is a befitting tribute to the great martyr of Mother India in the birth centenary year of Shaheed Bhagat Singh.

पंजाब

Punjab

21

उनाकोटि का त्यौहार

त्रिपुरा में एक महत्वपूर्ण पौराणिक तथा पुरातात्विक स्थल 'उनाकोटि' जो एक बंगाली नाम है जिसका अर्थ है 'एक करोड़ से एक कम'। 8वीं/9वीं शताब्दी से पूर्व चट्टानों को काटकर बनाए गए अनुपम भित्ति–चित्र से निर्मित अवशेषी उद्भृत चित्र कार्य का भारत में सबसे बड़ा स्थान उनाकोटि राजधानी अगरतला से लगभग 180 किमी. की दूरी पर स्थित है। हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान शिव एक करोड़ देवी–देवताओं की संगत के साथ काशी जाते हुए एक रात यहां पर रुके थे। अगली सुबह भगवान शिव को अकेले ही जाना पड़ा क्योंकि कोई भी जाग नहीं सका। वे तब शापित हुए और पत्थरों में परिवर्तित हो गए। बड़े–बड़े भित्ति–चित्र तथा पत्थर की प्रतिमाएं अपनी अनुपम मूर्तिकला सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध हैं। प्रतिवर्ष हजारों तीर्थ यात्री अशोकाष्टमी मेला तथा पौष मेला के दौरान इस मंदिर में आते हैं।

त्रिपुरा की झांकी में शिव का शीर्ष तथा गणेश की आकृति दर्शकों का ध्यान आकर्षित कर रही है।

त्रिपुरा

Festival of Unakoti

An important mythological and archaeological site in Tripura State, 'Unakoti', is a Bengali term which means 'one less than a crore'. Dating back to 8th/9th century, the biggest site of bust relief work in India consisting of unique rock-cut murals Unakoti is about 180 Kms from the state capital Agartala. Hindu mythology has it that Lord Shiva with his entourage of one crore gods and goddesses once halted here for a night on way to Kashi. Next morning Shiva had to set out alone as none could rise up. They were thus cursed and transformed into stones. The huge mural and stone images are famous for their unique sculptural beauty. Every year thousands of pilgrims visit this shrine during 'Ashokastami' mela and 'Poush' mela.

The tableau of Tripura showcases the central Shiva head and Ganesha figure inviting attention of the visitors.

Tripura

22

विरासत संरक्षण

असाधारण सौंदर्य के प्राकृतिक दृश्य से ओत–प्रोत और वनस्पति तथा जीव–जंतुओं की समृद्ध संपदा से संपन्न सिक्किम भारत के अत्यंत खूबसूरत राज्यों में से एक है। विस्मयकारी "कंचनजंगा" (कंचनजंगा शिखर) विश्व में तीसरा सबसे ऊँचा पर्वत है। यह सिक्किम का संरक्षक देव है जो संपूर्ण विश्व के पर्यटकों और पर्वतरोहियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। सिक्किम में समृद्ध पर्वत ग्लेशियर है जो इसकी दो प्रमुख नदियों "तीस्ता" और "रांगित" के लिए सदाबहार स्रोत है और जिस पर पनबिजली उत्पन्न करने की प्रबल संभावनाएं हैं। सिक्किम सरकार पारिस्थितिकी अनुकूल तथा विकास के स्थानीय साधनों सहित विरासत संरक्षण प्राप्त करने के उद्देश्य से राज्य का विकास कर रही है।

सिक्किम ने अपनी झांकी के माध्यम से प्रत्येक समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक और परंपरागत प्रथाओं सहित अपने बेहतरीन तालमेल वाले समाज को दिखाने का प्रयास किया है जो सद्भावना से जीवनयापन करते हैं। प्रत्येक समुदाय ने अपने विशिष्ट सांस्कृतिक और सामाजिक आचार–विचारों, परंपराओं तथा प्रथाओं को संजो कर रखा है जिससे राज्य की विरासत का संरक्षण होता है।

सिक्किम

Heritage Conservation

Sikkim, blessed with a natural landscape of exceptional beauty and endowed with rich wealth of flora and fauna, is one of the most beautiful states of India. The fabulous 'Kanchandzonga' (Kanchanjungha peak) is the third highest mountain in the world. It is the guardian deity of Sikkim that beckons tourists and mountaineers from all over the world. Sikkim has rich mountain glaciers, the perennial source for its two major rivers, 'Teesta' and 'Rangit' and thus having tremendous potential for generating hydro electricity. The Government of Sikkim is pursuing the development of the state with the objective of achieving heritage conservation with eco-friendly and sustainable means of development.

Through its tableau, the State of Sikkim attempts to show its closely-knit society with socio-cultural and traditional practices of each community who live in perfect harmony. Each community has conserved its distinct cultural and social ethos, traditions and practices, thereby conserving the heritage of the State.

Sikkim

23

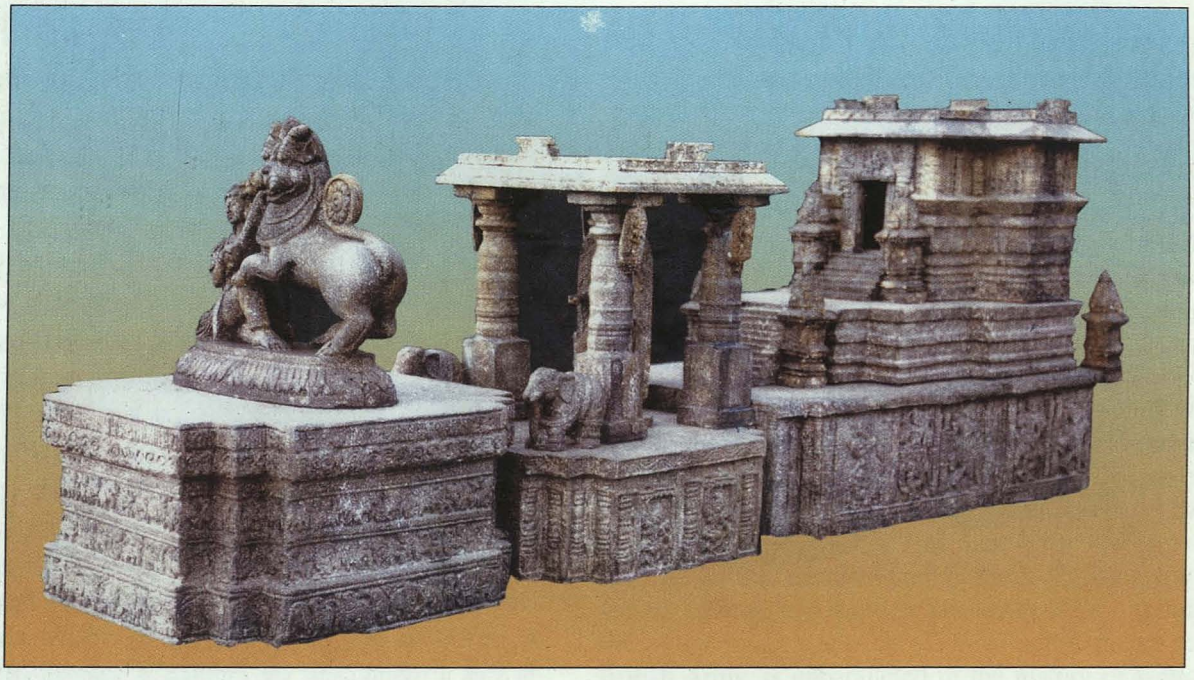

होयसल मंदिर

भारतीय कला की विरासत में अनुपम तथा अविस्मरणीय स्थान रखने वाले कर्नाटक के होयसल के मंदिर अपनी विशिष्ट कला तथा वास्तुकला के शैली वैविध्य के लिए जाने जाते हैं। कर्नाटक स्थित बेलूर का चन्नाकेशव मंदिर होयसल वंश का एक स्मारक है। 1117 ई. में होयसल राजा विष्णुवर्द्धन द्वारा निर्मित चन्नाकेशव मंदिर में एक पत्थर पर होयसल राजचिन्ह अंकित है जिसमें एक युवक को चीते से लड़ते हुए दर्शाया गया है। मनोहारी सौंदर्य वाला यह मंदिर परंपरागत सुसज्जित सन्दूकची के ढक्कन की तरह प्रतीत होता है। इसमें खुरदरे–दानेदार तथा नरम शैलखटी पत्थर का प्रयोग किया गया है। यहां दर्शायी गई ब्रैकट में लगी आकृतियों के बारे में ऐसा विश्वास है कि इन्हें जीवंत सौंदर्य के आधार पर बनाया गया है।

कर्नाटक की झांकी में होयसल मंदिरों में 'पत्थर में अमृत' के रूप में वर्णित परिष्कृत कलाकृति को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

कर्नाटक

Hoysala Temple

In India's Heritage of Art, the temples of the Hoysalas in Karnataka having a unique and unforgettable niche are known for their intricate art and diverse style of architecture. The Channakeshava temple of Belur in Karnataka is a monument of the Hoysala dynasty. Built in 1117 AD by the Hoysala King Vishnuvardhana, the Channakeshava temple has the Hoysala royal insignia in stone, depicting a youth fighting against a tiger. This temple of captivating beauty stands on an elevated platform called 'Jagathi', and the temple looks like a decorated lid of traditional casket. The material used is coarse, grained and soft soapstone. Bracket figures shown here are believed to be modelled on living beauties.

The tableau of Karnataka attempts to showcase the intricate art work of the Hoysala temples described as "Nectar in Stone".

Karnataka

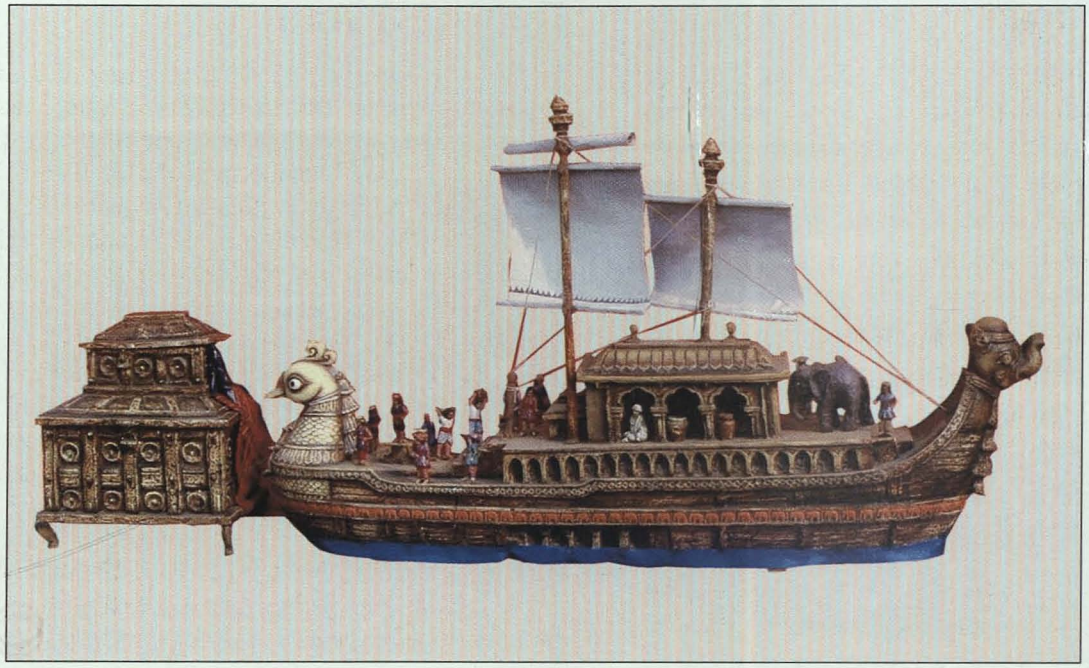

परम्परागत समुद्री व्यापार

उड़ीसा के समुद्री व्यापार का समृद्ध इतिहास रहा है। समुद्री यात्रा में महती विशेषज्ञता रखने के साथ–साथ उड़िया लोगों के प्राचीन तथा मध्यकाल के दौरान समुद्र पार वाणिज्यिक तथा सांस्कृतिक संबंध थे। व्यापारी मुख्य रूप से नारियल, मिट्टी के बर्तन, चंदन की लकड़ी, कपड़ा, चावल, मसाले, लौंग, काशीफल, रेशम की साड़ी, ताम्बूल के पत्ते, हाथी, कीमती रत्नों जैसी वस्तुओं का व्यापार करते थे। उड़िया व्यापारी, ''बोइतास'' नामक अपनी नौकाओं में समुद्री यात्राओं पर जाते थे। आजकल गौरवपूर्ण समुद्री व्यापार परंपरा ''बायोता बंदना'' की स्मृति में प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के दिन समारोह होते हैं। इस अवसर पर, दीपों से युक्त केले के तनों, ताम्बूल के पत्ते तथा गिरीदार फलों से बनी लघुरूप अथवा कृत्रिम नौकाएं नदियों अथवा तालाबों में छोड़ी जाती हैं।

उड़ीसा की झांकी में विशाल अग्रभाग तथा सौंदर्यपूर्ण पृष्ठ भाग वाली कलात्मक ढंग से बनाई गई परम्परागत किश्ती (बायोता) को दिखाया गया है। झांकी के अग्रभाग में योद्धा नर्तक परंपरागत वेशभूषा तथा ताल के साथ 'पाइका' नृत्य प्रस्तुत करते दिखाए गए हैं।

Traditional Maritime Trading

Orissa has a rich maritime trade record. Oriyas having great expertise in sea voyage had commercial as well as cultural relationship across the seas during ancient and medieval times. The merchants were mainly trading with articles like coconuts, earthen utensils, sandalwood, cloth, rice, spices, clove, pumpkin, silk sarees, betel leaves, elephants and precious stones. The Oriya merchants, who went on sea voyages with their boats called "boitas". To commemorate the glorious maritime trade tradition these days, "Biota Bandana" celebrations take place on the day of Kartik Purnima each year. On this occasion, miniature or dummy boats made of banana stems with lamps, betel leaves and nuts are set on into the rivers or tanks.

The Tableau of Orissa shows an artistically done traditional boat (biota) with a gigantic front and a beautiful tail. On the front of the tableau, warrior dancers are shown presenting 'Paika' dance with their traditional costume and rhythm.

उड़ीसा ***Orissa***

25

झांसी की रानी

प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर उत्तर प्रदेश अपने महानतम् स्वतंत्रता सेनानियों में से एक झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को याद करके उन्हें श्रद्धांजलि देता है। तत्कालीन झांसी प्रांत के शासक गंगाधर राव ने 21 नवंबर 1853 को अपनी मृत्यु से पहले दामोदर राव नामक बच्चे को गोद लिया और रानी लक्ष्मीबाई को झांसी का प्रतिशासक नियुक्त किया। परंतु भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड डलहौजी झांसी को अपने राज्य में मिला लेना चाहते थे। इसलिए उन्होंने ब्रिटिश सेना को झांसी के किले की घेराबंदी करने का आदेश दिया। इस रणनाद के साथ कि "मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी", रानी लक्ष्मीबाई ने उन्हें चुनौती दी और अंतिम सांस तक ऐतिहासिक युद्ध लड़ा और 17 जून, 1857 को आत्मबलिदान कर दिया। रानी लक्ष्मीबाई के इस बलिदान ने लोगों को प्रेरित किया और उनमें मातृभूति की स्वतंत्रता के लिए बलिदान की भावना को प्रज्ज्वलित कर दिया। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने ब्रिटिश सेना का सामना करते हुए 22–23 वर्ष की युवा आयु में जिस असाधारण शौर्य, साहस और बलिदान का परिचय दिया वह विश्व के इतिहास में अद्वितीय है। बुंदेलखंड के लोकगीतों और लोक–साहित्य में आज भी इस वीरांगना की वीरता का गुणगान किया जाता है।

उत्तर प्रदेश की झांकी में झांसी की रानी युद्ध पोशाक में घोड़े की पीठ पर सवार दिखाई देती हैं। पीछे रानी का विश्वसनीय तोपची गौस खाँ अपनी तोप "कड़क बिजली" के साथ है जिसके पीछे पृष्ठ भाग में ब्रिटिश सेना के साथ स्वतंत्रता सेनानी लड़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। एकदम पृष्ठ भाग में झांसी का किला दर्शाया गया है जो भारत की स्वतंत्रता के प्रथम युद्ध का प्रतीक है।

Jhansi Ki Rani

On the occasion of 150th anniversary of the first war of Indian independence, the State of Uttar Pradesh remembers and pays homage to one of the greatest freedom fighters - Rani Lakshmi Bai of Jhansi. The ruler of the erstwhile Jhansi State, Gangadhar Rao just before his death on November 21, 1853, adopted a child named Damodar Rao and appointed Rani Lakshmi Bai as the Regent of Jhansi. But Lord Dalhousie, the then Governor General of India wanted to annexe Jhansi. Hence, he ordered the British Army to besiege the fort of Jhansi. With the war-cry, "I shall not yield my Jhansi", Rani Lakshmi Bai challenged them and fought a historic battle unto death and attained martyrdom on June 17, 1857. The martyrdom of Rani Lakshmi Bai inspired the people and infused them with a feeling of sacrifice for the freedom of motherland. The exemplary valour, courage and sacrifice shown by Rani Lakshmi Bai at the young age of 22-23 years while facing the British Army, is unparalleled in the history of world. The folk songs and folklores of Bundelhkhand eulogise the valour of this Amazon even today.

In the tableau of Uttar Pradesh, Rani of Jhansi is seen on the horse-back in battle-attire. Rani's reliable Topachi, Ghaus Khan, is seen with his gun, "Karak Bijli" in the rear, followed by freedom fighters fighting with British Army. In the rear part, the fort of Jhansi is shown symbolising India's first war of independence.

उत्तर प्रदेश

Uttar Pradesh

अंतर्राष्ट्रीय जल वर्ष

जल जीवित प्राणियों के अस्तित्व के लिए सबसे पहली आवश्यकता है और मनुष्य इसका कोई अपवाद नहीं है। जीवन के इस निरंतर समाप्त हो रहे स्रोत के अविवेकपूर्ण प्रयोग के कारण जल की उपलब्धता प्रत्येक गुजरते दिन के साथ कम होती जा रही है। इसके अलावा, देश में जल के असमान वितरण से एक साथ दो विरोधाभासी स्थितियां पैदा हुई हैं। जब एक हिस्से में बाढ़ रहती है तो दूसरे हिस्से में लंबे समय तक एक बूंद भी नहीं गिरती है। इसलिए हमें संपूर्ण देश में जल का समान बंटवारा सुनिश्चित करने के अलावा जल का विवेकपूर्ण प्रयोग और इसका संरक्षण सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

यद्यपि झांकी का अग्रभाग हमें सुरम्य विश्व का स्मरण करता है जब जल बहुतायत में उपलब्ध है तथापि, पृष्ठ भाग में जल का समान बंटवारा सुनिश्चित करने के लिए संपूर्ण देश में जल के विभिन्न स्रोतों को आपस में जोड़ने के मनोहारी रूपक का चित्रण पेश किया गया है। झांकी के माध्यम से किया गया चित्रण लोगों को जल संरक्षण के प्रति प्रोत्साहित करता है और उन्हें संपूर्ण देश में जल का समान बंटवारा सुनिश्चित करने के लिए मंत्रालय की पहल की जानकारी भी देता है।

जल संसाधन मंत्रालय

International Year of Water

Water is the foremost necessity for the existence of living creatures and human beings are no exception to that. Owing to the injudicious use of this ever depleting source of life, the availability of water is shrinking with each passing day. Besides, the unequal distribution of water in the country presents two contradictory situations simultaneously. While one part remains flooded, the other part longs even for a single drop. And so, we must ensure the judicious use of water and its conservation, besides ensuring the equal distribution of water across the country.

While the front part of the tableau reminds us of the picturesque world when water is available in plenty, the rear part presents a captivating metaphor depicting the inter-linking of various water resources across the country to ensure the equal distribution of water. The depiction through tableau encourages people for water conservation, and also informs them about the initiatives of the Ministry to ensure the equal distribution of water across the country.

Ministry of Water Resources

27

बालिका शिक्षा

86वां संवैधानिक संशोधन विधेयक–2002 में 6–14 वर्ष के सभी बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा को मूल अधिकार बनाया गया है जिसमें यह व्यवस्था है कि "राज्य 6–14 वर्ष के सभी बच्चों को इस तरीके से निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा दे जिसे राज्य विधि द्वारा निर्धारित करे"। इस लाभ से वंचित समूह से संबंधित बालिकाओं की शिक्षा पर "सर्वशिक्षा अभियान" में मुख्य रूप से ध्यान दिया गया है। प्राथमिक शिक्षा को सर्वसाधारण तक पहुंचाने हेतु इन प्रयासों के केन्द्र में प्राथमिक शिक्षा को बालिका तक पहुंचाना है। प्राथमिक शिक्षा में बालिकाओं की भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए सर्व शिक्षा अभियान के तहत कार्य योजनाओं और मध्यस्थताओं की एक श्रृंखला तैयार की गई है। इसका लाभ "अंतिम छोर" तक पहुंचाने के लिए अब और अधिक ध्यान दिया जा रहा है तथा प्रयास किए जा रहे हैं और यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि न केवल सभी बालिकाएं स्कूल जाएं बल्कि वे गुणता शिक्षा के साथ प्राथमिक शिक्षा का चक्र पूरा करें।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय की झांकी में इन उपलब्धियों को दर्शाया गया है और बालिकाओं के मध्य बुनियादी शिक्षा को बढ़ावा देने की सरकार की विभिन्न कार्य योजनाओं का चित्रण किया गया है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

Girls' Education

The 86th Constitutional Amendment Act, 2002 has made Elementary Education a fundamental Right for all children in the age group of 6-14 years by providing that "the State shall provide free and compulsory education to all children of six to fourteen years in such manner as the State may, by law, determine". Education of Girls belonging to disadvantaged group is primarily focussed in 'Sarva Shiksha Abhiyan' (SSA). Reaching out to the girl child is central to the efforts to universalise elementary education. A range of strategies and interventions have been designed under SSA to facilitate participation of girls in elementary education. Greater focus and efforts are now being made to extend the gains to the "last mile" and to ensure that not only all girls are in school but they also complete the cycle of elementary education with quality education.

The tableau of Ministry of Human Resource Development showcases these achievements and highlights the Government' various strategies to promote basic education amongst girls.

Ministry of Human Resource Development

जीवन के लिए इस्पात

राष्ट्रीय इस्पात नीति–2005 के अनुसार भारत के पास विविधतायुक्त इस्पात मांग की पूर्ति के लिए विश्व स्तर का आधुनिक और कार्यक्षम उद्योग होना चाहिए। इसलिए इस नीति का लक्ष्य न केवल लागत, गुणवत्ता और उत्पाद मिश्रण के संदर्भ में वैश्विक प्रतिस्पर्धा प्राप्त करना होगा बल्कि कार्यक्षमता और उत्पादकता के वैश्विक मानदंड के संदर्भ में भी होगा। इसके लिए 2004–05 के 38 मिलियन टन के स्तर से 2019–20 तक प्रतिवर्ष 100 मिलियन टन से अधिक के स्वदेशी उत्पादन की जरूरत होगी। इससे यह अर्थ निकलता है कि प्रतिवर्ष 7.3 प्रतिशत की बढ़ी हुई वार्षिक वृद्धि हो। स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया सहित मंत्रालय के तत्वावधान में कार्यरत सभी संगठन अपनी कारपोरेट सामाजिक जिम्मेदारियां उठाने के अलावा इस उद्देश्य को अत्यंत प्रभावकारी ढंग से पूरा करने के लिए अपनी अपनी सीमाओं का विस्तार कर रहे हैं।

इस्पात मंत्रालय की झांकी के माध्यम से दर्शक राष्ट्र के विकास में इस्पात उद्योग के अन्यथा अनदेखे योगदान और यह कैसे बहुतों के जीवन का उत्थान करता है, यह सब समझ पाएंगे।

इस्पात मंत्रालय

Steel for Life

As per the National Steel Policy - 2005, India should have a modern and efficient steel industry of world standards, catering to diversified steel demand. The focus of the policy would, therefore, be to achieve global competitiveness not only in terms of cost, quality and product-mix but also in terms of global benchmarks of efficiency and productivity. This will require indigenous production of over 100 million tonnes per annum by 2019-20 from the 2004-05 level of 38 million tonnes. This implies a compounded annual growth of 7.3 percent per annum. All the organizations functioning under the aegis of the Ministry including Steel Authority of India Limited (SAIL) are stretching their limits to meet the objective besides carrying out their Corporate social responsibilities very effectively.

Through the tableau of the Ministry of Steel, the viewer gets to understand the otherwise overlooked contribution of the steel industry towards the development of the nation and how it enhances the lives of many.

Ministry of Steel

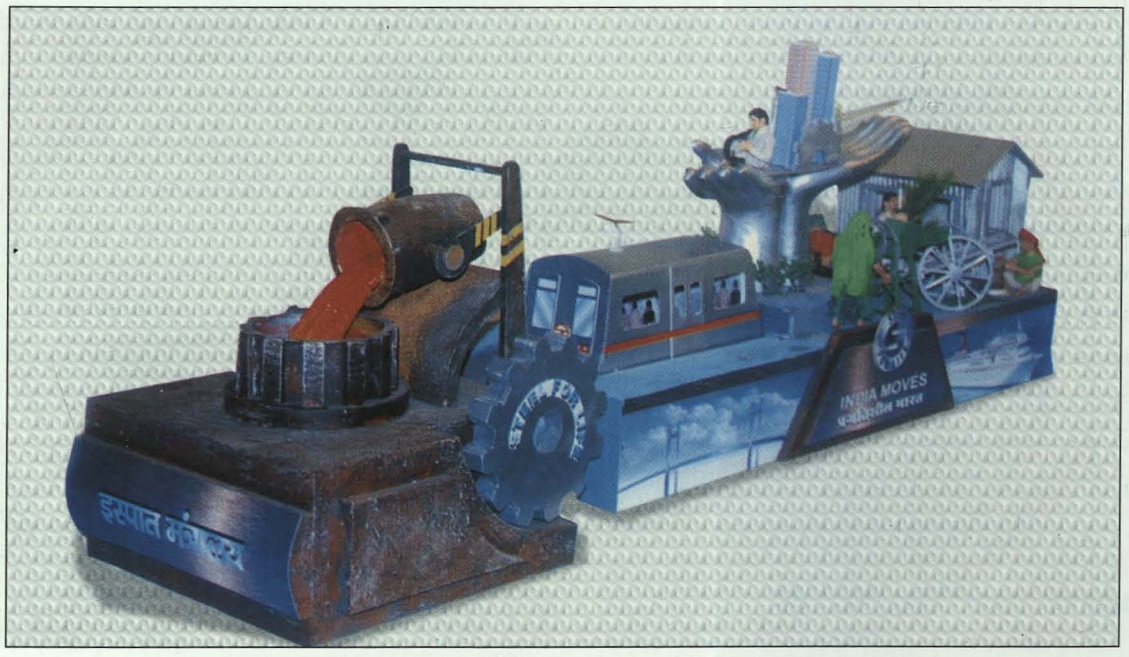

राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम

उस प्रत्येक परिवार को, जिसके वयस्क सदस्य स्वेच्छा से अकुशल शारीरिक काम चाहते हों, प्रत्येक वित्त वर्ष में कम से कम "गारंटी युक्त मजदूरी रोजगार के सौ दिन" मुहैया कराने हेतु ऐतिहासिक राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम संसद द्वारा सितम्बर 2005 में अधिनियमित किया गया था। इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में परिवारों की आजीविका सुरक्षा में वृद्धि करना है। यह कार्य गारंटी भूमि को उत्पादन योग्य बनाने, ग्रामीण महिलाओं का सशक्तीकरण, गांव से शहर की ओर प्रवजन को कम करने तथा अन्यों के बीच सामाजिक समानता को घोषित करने जैसे अन्य उद्देश्यों की प्राप्ति में भी सहायता करता है। प्रथम चरण में राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगर गारंटी अधिनियम 200 जिलों में लागू किया गया था। वर्तमान में यह 330 जिलों में लागू है तथा 1 अप्रैल 2008 से सभी जिले शामिल किए जाने हैं। ग्रामीण रोजगार गारंटी स्कीम केंद्र सरकार द्वारा अधिसूचित क्षेत्रों के समस्त ग्रामीण परिवारों के लिए खुली है। इस अधिनियम में केंद्र सरकार, राज्य सरकारों, पंचायतों तथा स्थानीय समुदाय के बीच सहयोगपूर्ण भागीदारी की परिकल्पना की गई है। ग्राम पंचायत की ग्रामीण रोजगार गारंटी स्कीम के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका है।

ग्रामीण विकास मंत्रालय की झांकी में राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम के महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर किया गया है।

ग्रामीण विकास मंत्रालय

National Rural Employment Guarantee Act

The historic National Rural Employment Guarantee Act (NREGA) was enacted by the Parliament in September, 2005 to provide for at least "One Hundred Days of Guaranteed Wage Employment" in every financial year to every household whose adult members volunteer to do unskilled manual work. The objective is to enhance the livelihood security of the households in rural areas. This work guarantee also helps in serving other objectives like making land productive, empowering rural women, reducing rural-urban migration and fostering social equity among others. In the first phase, NREGA was made operational in 200 districts. Presently, it is operational in 330 districts and is to cover all the districts in the country from 1st April 2008. The Rural Employment Guarantee Scheme (REGS) is open to all rural households in the areas notified by the Central Government. The Act envisages a collaborative partnership between the Central Government, the State Governments, the Panchayats and the local community. The Gram Panchayat has a pivotal role in the implementation of REGS.

The tableau of the Ministry of Rural Development highlights the salient features of the NREGA.

Ministry of Rural Development

30

ऊर्जावान भारत

कोल इंडिया लिमिटेड देश में ऊर्जा सुरक्षा मुहैया कराने में अपनी भूमिका का झांकी के माध्यम से उल्लेख करता है।

विश्व में एकमात्र सबसे बड़ी कोयला उत्पादक कंपनी होने के कारण कोल इंडिया लिमिटेड की भारतीय ऊर्जा परिदृश्य में महती उपस्थिति है। 'कोयला खनक' सर्वोत्कृष्टता से कोल इंडिया के महत्वपूर्ण ऑपरेशन के अग्र मोर्चे पर है तथा तद्नुरूप कोल इंडिया लिमिटेड की झांकी के अग्रभाग पर कोयला खनक के चेहरे का चित्रण किया गया है। राष्ट्र को ऊर्जा सुरक्षा मुहैया कराने हेतु कोयला खदान में निहित खतरे को उठाते हुए वह परिश्रम के साथ दिन–रात कार्य करता है। भारत में कोयला खदान का कार्य खुली खुदाई तथा भूमिगत खुदाई तरीकों से किया जाता है। खुदाई के समय काम आने वाले अन्य खुदाई उपस्करों के साथ कोयला खुदाई के इन दो पहलुओं का चित्रण किया गया है। बिजली की पारेषण लाइनें तथा उडेलता हुआ पिघला इस्पात कोल इंडिया के बिजली उत्पादन तथा इस्पात निर्माण – दो बड़े उपभोक्ता क्षेत्र हैं, में सशक्त भूमिका का द्योतक है। कोयले से लदे डिब्बे देश के विभिन्न भागों में कोयले की आवाजाही के द्योतक हैं। ग्रामीण क्षेत्र का एक खुशहाल परिवार उस समृद्धि का द्योतक है जिसे कोल इंडिया कोयला लदान क्षेत्रों में तथा इसके आसपास के गांवों में लाया है।

कोल इंडिया लिमिटेड
कोयला मंत्रालय

Energising India

The tableau of Coal India Limited through its tableau highlights its role in providing energy security to the country.

Being the single largest coal producing company in the world, Coal India Limited has a gigantic presence in Indian Energy Scenario. 'Coal Miner' quintessentially is at the forefront of Coal India's core operation and accordingly the tableau of the Coal India Limited depicts the face of a coal miner on the front portion. He works day and night arduously bearing the inherent risks of coal mining to provide energy security to the Nation. Coal mining in India is done through opencast and underground methods. These two facets of coal mining along with mining equipment in operation are portrayed. Transmission lines and molten steel pouring out indicate Coal India's strong role in power generation and steel making – the two major consuming sectors. Coal laden wagons indicate coal movement to various corners of the country. A happy family in rustic surroundings symbolizes the prosperity that Coal India brings to villages in and around coal mining areas.

Coal India Limited
Ministry of Coal

आदिवासियों की विरासत कला

हमारे देश के आदिवासी समुदायों की जीवन–शैली हमें हमेशा सम्मोहित करती रही है। जब विश्व धीरे–धीरे एक वैश्विक गांव बनता जा रहा है और प्रत्येक समुदाय अपनी जातीय पहचान का लोप हो रहा है तो यह देखना शिक्षाप्रद है कि इन आदिवासी लोगों ने कैसे अपनी विरासत को संजोकर रखा है। कला आदिवासी जीवन का अभिन्न हिस्सा है और जिसका भी वे सृजन करते हैं वह कला बन जाती है। जो वेशभूषा वे पहनते हैं, जो गहने वे इस्तेमाल करते हैं, उनके घरों की दीवारों पर बनाए गए चित्र, जो हस्तशिल्प वे तैयार करते हैं वह सब एक अनूठी कला बन जाती है।

आदिवासी कार्य मंत्रालय की झांकी में आदिवासी भारत की रंग–बिरंगी विरासत कला का प्रदर्शन करने का प्रयास है। इसके अग्रभाग में आदिवासियों के समृद्ध और रंग–बिरंगे कला रूपों का प्रदर्शन है। अग्रभाग में लाम्बडा आदिवासी व्यक्ति (आंध्र प्रदेश से) की आदमकद मूर्ति दर्शायी गई है जो शीशायुक्त अपने प्रसिद्ध कशीदाकारी का महीन कार्य कर रहा है। बैठी हुई मूर्ति कशीदाकारी करती हुई दर्शायी गई है जिससे अपने चारों ओर कशीदाकारी और शीशे की कारीगरी से युक्त महीन कार्य वाले कपड़े का एक टुकड़ा फैला रखा है। अग्रभाग में छत्तीसगढ़ के आदिवासी क्षेत्र से प्रसिद्ध धातु दस्तकारी दर्शायी गई है। पृष्ठभाग में पेड़ों और अन्य हरियाली से निर्मित विशिष्ट वातावरण में भिन्न–भिन्न किस्म की दो झोंपड़िया दर्शायी गई हैं।

जनजातीय कार्य मंत्रालय

Tribals' Heritage Art

The lives and habits of the tribal communities of our country have always fascinated us. When the world is gradually becoming a global village and every community is loosing its ethnic identity, it is educative to see how these tribal people have preserved their heritage. Art is an integral part of tribal life and everything they create becomes a piece of art. The costume which they wear, the jewellery they use, figures crafted on the walls of their houses, the handicraft they prepare etc. make it a unique piece of art.

The tableau of Ministry of Tribal Affairs is an effort to demonstrate the colourful heritage art of tribal India. The front part displays the rich and the colourful art forms of the tribals. This shows a larger than life size statue of a Lambada tribes man (from Andhra Pradesh) working on their famed embroidery with mirror work. The seated figure is shown doing embroidery and spread all around her is a big piece of cloth with intricate work of embroidery and mirror work. In the front is shown the famed metal craftwork from the tribal areas of Chhatisgarh. The rear part shows two different types of huts in typical forest environment that is created by trees and other greenery.

Ministry of Tribal Affairs

पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से महिला सशक्तीकरण

पंचायती राज मंत्रालय की झांकी में ग्राम पंचायतों, पंचायत समितियों तथा जिला परिषदों के चुने हुए सदस्यों तथा अध्यक्षों के जरिए महिला सशक्तीकरण तथा लोकतांत्रिक प्रक्रिया में उनकी सक्रिय भागीदारी को मुख्य आकर्षणों के रूप में दिखाया गया है। भारतीय संविधान की धारा 243 घ के तहत पंचायती राज संस्थाओं तथा नेतृत्व पदों में महिलाओं के लिए 1/3 स्थान आरक्षित हैं। देश में 2.4 लाख पंचायतें हैं जिनके 28 लाख चुने हुए सदस्य हैं। इनमें से 10 लाख से अधिक महिलाएं हैं अर्थात् 33 प्रतिशत आरक्षण की तुलना में 37.8 प्रतिशत स्थानों पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व है।

इस झांकी में स्थानीय शासन के रूप में तीन स्तरीय पंचायतों की भूमिका तथा इनमें महिला सशक्तीकरण का चित्रण किया गया है। इसमें गांवों में महिलाओं की बेहतर स्थिति तथा विकास प्रक्रिया में उनकी भागीदारी पर भी जोर दिया गया है। अग्रभाग पर जिला परिषद कार्यालय दिखाया गया है जिसमें अध्यक्ष, जोकि एक महिला है, ग्रामीण क्षेत्रों के विकासात्मक मुद्दों पर चर्चा करने के लिए जिला परिषद के चुने हुए सदस्यों की बैठक की अध्यक्षता कर रही है। पृष्ठ भाग में एक महिला को ग्राम प्रधान के रूप में चित्रित किया गया है जो गांव में विकासात्मक कार्यक्रमों तथा सेवा दिए जाने की समीक्षा तथा पर्यवेक्षण कर रही है।

पंचायती राज मंत्रालय

Women Empowerment through Panchayati Raj Institutions

The Tableau of Ministry of Panchayati Raj highlights the empowerment of women and their active participation in the democratic process, by way of being elected members and Chairpersons of the Gram Panchayats, Panchayat Samitis and Zila Parishads. Under Article 243 D of the Indian Constitution, 1/3rd of seats in the Panchayati Raj Institutions (PRIs) as well as the leadership positions are reserved for women. There are 2.4 lakh panchayats in the country that have over 28 lakh elected members. Of these over 10 lakh are women, i.e. against 33% reservation, 37.8% of seats are represented by woman.

The tableau depicts the role of the 3 tier Panchayats as institutions of local governance and the empowerment of women therein. It also emphasizes the improved position of women in the villages and their participation in the development process. In front part, Zila Parishad office is shown where Chairperson, who happens to be a woman, is chairing the meeting of the elected members of Zila Parishad to discuss the developmental issues of the rural areas. The rear part depicts a woman as village Pradhan reviewing, monitoring and supervising the developmental programmes and delivery of services in the village.

Ministry of Panchayati Raj

रेल और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन

अनेक इतिहासकारों का विश्वास है कि भारतीय स्वतंत्रता के लिए संघर्ष उस समय शुरू हुआ जब गांधी जी को 'कुली बैरिस्टर' होने के नाते दक्षिण अफ्रीका में प्रथम श्रेणी के रेल डिब्बे से बाहर फेंक दिया गया था। गांधी जी ने रेल को एकीकरण की एक बड़ी भूमिका में देखा। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान घटी कुछ बड़ी घटनाएं भारतीय रेल के आसपास घूमती रही। स्वतंत्रता आंदोलन को रेल की उपलब्धता के कारण अपेक्षित गति मिली क्योंकि यह परिवहन और संचार का अति महत्वपूर्ण तरीका था।

रेल मंत्रालय ने अपनी झांकी के अंग्रभाग में स्वतंत्रता आंदोलन की महत्वपूर्ण घटनाओं और प्रमुख नेताओं को दर्शाया है। पृष्ठ भाग के दृश्य में रेलवे स्टेशन पर जॉन साइमन के पहुंचने पर लोगों के विरोध प्रदर्शन का चित्रण है। इसके पीछे दूसरी घटना का चित्रण है जो अगस्त 1942 में पुणे (तत्कालीन पूना) रेलवे स्टेशन पर हुई थी जब मौलाना अबुल कलाम आजाद, महात्मा गांधी, सरोजिनी नायडू और पंडित जवाहर लाल नेहरू जैसे प्रमुख कांग्रेसी नेताओं को मुम्बई (तत्कालीन बंबई) में बंदी बनाकर एक विशेष ट्रेन से पुणे ले जाया गया था।

रेल मंत्रालय

Railways and National Freedom Movement

Many historians believe that struggle for Indian freedom began when Gandhiji was thrown out of the first class Railway compartment in South Africa being a 'coolie barrister'. Gandhiji saw in the Railways a great integrating role. Some of the great events have revolved round the Indian Railways during the freedom movement. The freedom movement gained the required momentum due to the availability of Railways as the most important mode of transportation and communication.

The Ministry of Railways in the front portion of its tableau projects the important events and prominent leaders of the freedom movement. The visual on the rear portion shows people's protest on arrival of John Simon at a Railway Station. This is followed by another incident which took place in Pune (then Poona) Railway Station in August, 1942 when prominent Congress leaders like Maulana Abul Kalam Azad, Mahatma Gandhi, Sarojini Naidu and Pandit Jawaharlal Nehru after being arrested in Mumbai (then Bombay) were taken to Pune in a special train.

Ministry of Railways

ग्रामीण स्वास्थ्य एवं संतुलित आहार

राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन ने ग्रामीण लोगों को बहुत लाभान्वित किया है जो अन्यथा अच्छी स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित रह गए थे। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन ग्रामीण क्षेत्रों के लाखों लोगों के लिए बेहतर स्वास्थ्य परिणामों की गारंटी देता है। विशेषकर, उनके लिए जो हाशिए पर हैं तथा कमजोर समुदायों से संबंध रखते हैं। ग्राम स्वास्थ्य तथा पोषण दिवस प्राथमिक स्वास्थ्य देखरेख अवधारणा मुहैया कराने हेतु एक प्रभावी प्लेटफार्म होने का वायदा करता है। इस संगठन ने नियमित आधार पर लोगों के लिए बहुत से लाभ सुनिश्चित किए हैं। ग्राम स्वास्थ्य तथा पोषण दिवस की बड़ी उपलब्धियों में से एक यह है कि अब निवारक तथा प्रोत्साहनात्मक मध्यस्थताओं के साथ, विशेषकर गर्भवती महिलाओं, बच्चों तथा किशोरों के लिए, शतप्रतिशत कवरेज दिया गया है। स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय की झांकी राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन तथा इसके लाभों का एक आकर्षक चित्रण है तथा इसके साथ–साथ यह संदेश भी देती है कि कितनी बेहतर चिकित्सा सुविधाएं ग्रामीण लोगों के पास पहुंच रही हैं। अग्रभाग में एक खुशहाल तथा स्वस्थ ग्रामीण परिवार दिखाया गया है जो राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के लाभों को रेखांकित करता है।

स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय

Village Health and Nutrition

The National Rural Health Mission (NRHM) has ushered in many benefits for the rural people who otherwise remained deprived of the good health facilities. The NRHM guarantees better health outcomes for millions of people in rural areas particularly, to those who belong to marginalized and vulnerable communities. Village Health and Nutrition Day (VHND) promises to be an effective platform to provide the concept of primary health care. Its organization on regular basis has ensured many benefits for the people. One of the great achievements of VHND is that now there is a hundred percent coverage with preventive and promotive interventions, especially for pregnant women, children and adolescents.

The tableau of the Ministry of Health and Family Welfare comes as a captivating portrayal of NRHM and its benefits, and simultaneously conveying the message that how good medical facilities are reaching out to the rural people. The front part shows a happy and healthy rural family underlining the benefits of NRHM.

Ministry of Health and Family Welfare

35

भारत की आजादी के 60 वर्ष

2007 में भारत ने आज़ादी के 60 वर्ष मनाए। हम उन स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सम्मान स्वरूप नमन करते हैं जिनके बलिदान से भारत विदेशी शासन से स्वतंत्र हुआ और हम लाल किले की प्राचीर से तिरंगा फहरा सके। अपनी झांकी के माध्यम से केंद्रीय लोक निर्माण विभाग राष्ट्र की ओर से उन शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है जिन्होंने लाल किले पर तिरंगा फहराने की दृढ़तापूर्वक शपथ ली थी और स्वतंत्रता की वेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

झांकी में हमारे राष्ट्रीय ध्वज के रंग मानदंडों का चित्रण किया गया है। झांकी का अग्रभाग अपना राष्ट्रीय ध्वज उठाए एक भारतीय नागरिक के पुष्पों से सुसज्जित चित्रण की शोभा को बढ़ा देता है जो हमारे देश की एकता और अखंडता का प्रतीक है। पृष्ठ भाग में रंग–बिरंगे फूलों से उकेरे गए लाल किले की भव्यता में गीत गाते हुए बच्चों को श्रद्धांजलि देते हुए दर्शाया गया है।

केंद्रीय लोक निर्माण विभाग

60 years of India's Independence

India celebrated 60 years of Independence in 2007. We bow our heads as mark of respect to those freedom fighters, whose sacrifice have made India independent from foreign domination and enabled us to unfurl the Tri-colour from the Rampart of the Red Fort. Through its tableau, the Central Public Works Department (CPWD) pays its rich tribute on behalf of the nation to those martyrs who solemnly pledged to hoist the Tri-colour on the Red Fort and laid their lives for the cause at the altar of freedom.

The tableau depicts the colours criteria of our National Flag. The front portion of the tableau enhances a floral depiction of an Indian citizen holding our National Flag, symbolising the unity and integrity of our country. The rear part shows children paying homage by singing songs in the grandeur of the Red Fort embossed with colourful flowers.

Central Public Works Department

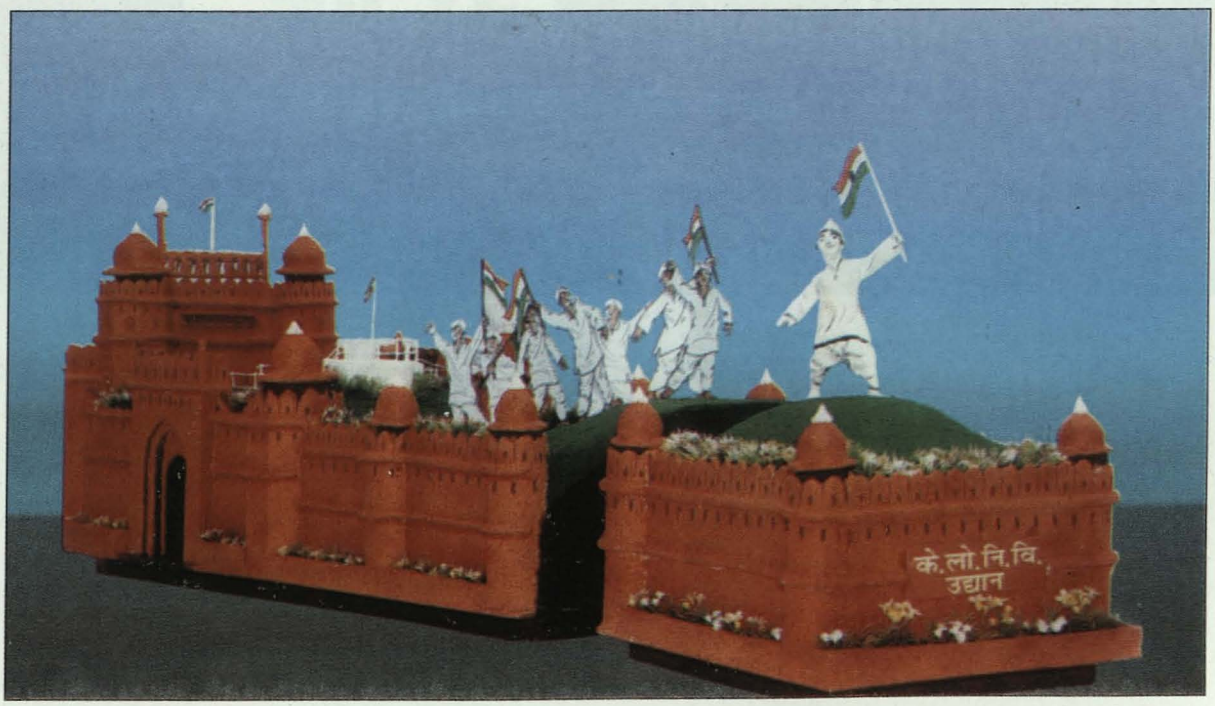

36

बच्चों की प्रस्तुति

CHILDREN'S PAGEANT

राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता - 2007

नाम	राज्य
कुमारी बबिता*	हरियाणा
मास्टर अमरजीत*	हरियाणा
मास्टर युक्तार्थ श्रीवास्तव**	छत्तीसगढ़
कुमारी ललरेमपुई (मरणोपरांत)***	मिजोरम
मास्टर रायापल्ली वामसी****	आंध्र प्रदेश
मास्टर के. बोनी सिंह****	मणिपुर
मास्टर अमोल अघी (मरणोपरांत)****	हरियाणा
मास्टर रवीन्द्र हलधर	छत्तीसगढ़
मास्टर मानस निशाद	छत्तीसगढ़
मास्टर विष्णु सी. एस.	केरल
मास्टर बिजीन बाबू	केरल
मास्टर अभिषेक (मरणोपरांत)	हरियाणा
मास्टर सूरज (मरणोपरांत)	हरियाणा
मास्टर के. राजकुमार	आंध्र प्रदेश
मास्टर पिंजरी चिनीगी साब	आंध्र प्रदेश
कुमारी मेहेर लेघा	उत्तर प्रदेश
मास्टर अंकित राय	हरियाणा
मास्टर सुभाष कुमार उर्फ गुड्डू	उत्तर प्रदेश
मास्टर रवि कुमार झरिया	छत्तीसगढ़
मास्टर अवधेश कुमार झरिया	छत्तीसगढ़
कुमारी काँग्रेस कंवर	राजस्थान
मास्टर सुनील कुमार पी. एन.	कर्नाटक

* भरत पुरस्कार
** संजय चोपड़ा पुरस्कार
*** गीता चोपड़ा पुरस्कार
**** बापू गयाधनी पुरस्कार

37

Winners of the National Award for Bravery – 2007

Name	State
Km. Babita*	Haryana
Master Amarjeet*	Haryana
Master Yuktarth Shrivastava**	Chhattisgarh
Km. Lalrempuii (Posthumous)***	Mizoram
Master Rayapalli Vamsi****	Andhra Pradesh
Master K. Boney Singh ****	Manipur
Master Amol Aghi (Posthumous)****	Haryana
Master Raveendra Haldar	Chhattisgarh
Master Manas Nishad	Chhattisgarh
Master Vishnu C.S.	Kerala
Master Bijin Babu	Kerala
Master Abhishake (Posthumous)	Haryana
Master Suraj (Posthumous)	Haryana
Master K. Rajkumar	Andhra Pradesh
Master Pinjari Chinigi Sab	Andhra Pradesh
Km. Meher Legha	Uttar Pradesh
Master Ankit Rai	Haryana
Master Subhash Kumar alias Guddu	Uttar Pradesh
Master Ravi Kumar Jhariya	Chhattisgarh
Master Awadhesh Kumar Jhariya	Chhattisgarh
Km. Congress Kanwar	Rajasthan
Master Sunil Kumar P.N.	Karnataka

* **Bharat Award**
** **Sanjay Chopra Award**
*** **Geeta Chopra Award**
**** **Bapu Gayadhani Award**

स्कूली बालक और बालिकाओं द्वारा बैंड

बच्चों की यह सांस्कृतिक प्रस्तुति 'सूर्य' धुन बजाते हुए बालक और बालिकाओं के बैंड के नेतृत्व में आगे बढ़ रही हैं। इस बैंड में दिल्ली के निम्नलिखित स्कूलों के बच्चे भाग ले रहे हैं :

श्री गुरु तेग बहादुर गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, शीशगंज, चांदनी चौक; राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, किशनगंज; डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सीनियर सेकेंड्री स्कूल, प्रेसीडेंट्स एस्टेट; गुरु नानक गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सब्जी मंडी, घंटाघर; दशमेश पब्लिक स्कूल, विवेक विहार; जैन समनोपासक सीनियर सेकेंड्री स्कूल, सदर बाजार; एस.एम. जैन सीनियर सेकेंड्री स्कूल, कमला नगर; महाराजा अग्रसेन पब्लिक स्कूल, अशोक विहार; रेयान इन्टरनेशनल स्कूल, हेमकुंट कॉलोनी; सी.आर.पी.एफ. सीनियर सेकेंड्री स्कूल, सैक्टर–14, रोहिणी; कमल मॉडल स्कूल, मोहन गार्डन; महाराजा अग्रसेन मॉडल स्कूल, पीतमपुरा और राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, द्वारका।

Band by School Boys and Girls

The cultural pageant of children is heralded by a Band Contingent of girls and boys playing the tune "Surya". Children participating in the Band are drawn from the following Schools of Delhi:

Shri Guru Teg Bahadur Girls Senior Secondary School, Sis Ganj, Chandni Chowk; Rajkiya Pratibha Vikas Vidylaya, Kishan Ganj; Dr. Rajendra Prasad Senior Secondary School, President's Estate; Guru Nanak Girls Senior Secondary School, Subzi Mandi, Ghanta Ghar; Dashmesh Public School, Vivek Vihar; Jain Samno Pasak Senior Secondary School, Sadar Bazar; S.M. Jain Senior Secondary School, Kamala Nagar; Maharaja Agrasen Public School, Ashok Vihar; Ryan International School, Sector-24, Rohini; Vivekanand Public School, Anand Vihar; Guru Harkishan Public School, Hemkunt Colony; CRPF Senior Secondary School, Sector-14, Rohini; Kamal Model School, Mohan Garden; Maharaja Agrasain Model School, Pitam Pura and Rajkiya Pratibha Vikas Vidyalya, Dwarka.

ध्वज वाहक – बालक और बालिकाएं

मार्च–पास्ट में भाग ले रहे बच्चे दिल्ली के निम्नलिखित स्कूलों से हैं :

एल.के. इन्टरनेशनल स्कूल, बवाना; गवर्नमेंट सर्वोदय विद्यालय, सैक्टर–12, आर.के. पुरम; गवर्नमेंट को–एड. एस. एस., नानकपुरा, मोतीबाग न.–1; मदर डिवाईन पब्लिक स्कूल, सैक्टर–3, रोहिणी; माउंट आबू पब्लिक स्कूल, सैक्टर–5, रोहिणी; विवेकानन्द पब्लिक स्कूल, आनन्द विहार; गवर्नमेंट सर्वोदय कन्या विद्यालय, बख्तावरपुर; उपदेश कौर गवर्नमेंट सर्वोदय कन्या विद्यालय, दरियापुर; गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बवाना; गवर्नमेंट सर्वोदय विद्यालय, प्रहलादपुर और गवर्नमेंट सर्वोदय विद्यालय, प्रशान्त विहार।

Flag Bearers – Boys and Girls

The children participating in the March Past are drawn from the following Schools of Delhi:

L.K. International School, Bawana; Government Sarvodaya Vidyalaya, Sector-XII, R.K. Puram; Government Co-Ed. S.S.S., Nanakpura, Motibagh No.1; Mother Divine Public School, Sector-3, Rohini; Mount Abu Public School, Sector-5, Rohini; Vivekanand Public School, Anand Vihar; Govt. Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Bakthawarpur; Updesh Kaur Govt. Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Dariyapur; Govt. Girls Senior Secondary School, Bawana; Govt. Sarvodaya Vidyalaya, Prehladpur and Govt. Sarvodaya Vidyalaya, Prashant Vihar.

तिरंगा साक्षी है

कमल मॉडल वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल, मोहन गार्डन, नई दिल्ली तथा वंदना इंटरनेशनल वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल, सेक्टर. 10, द्वारिका, नई दिल्ली के विद्यार्थियों की 'तिरंगा साक्षी है' की रचना गीत, संगीत तथा नृत्य पर आधारित है। देश के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान तिरंगा ने अनेक उतार–चढ़ाव देखा है। यह हमारे महान अतीत तथा स्वतंत्रता के साठ वर्ष की प्रगति और विकास का चित्रण करते विकासशील वर्तमान का साक्षी है। भारत द्वारा दिखाया गया शांति, अहिंसा तथा वैश्विक सद्भाव का मार्ग कलह से पीड़ित आज के विश्व के लिए प्रासंगिक बन गया है। नारी को प्राचीन भारतीय धर्म ग्रंथों में देवी के रूप में चित्रित किया है। महिलाएं पृथ्वी पर न केवल शक्ति बन गई हैं बल्कि उन्होंने अंतरिक्ष को भी छान मारा है। भारत की यह नारी शक्ति भारत को विश्व की महाशक्ति बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

Tiranga Sakshi Hai

The composition of the students of Kamal Model Senior Secondary School, Mohan Garden, New Delhi and Vandana International Senior Secondary School, Sector – 10, Dwarka, New Delhi 'Tiranga Sakshi Hai', is based on song, music and dance. Tri – colour had witnessed the ups and downs, the country has undergone during the freedom struggle. It testifies to our great past and progressive present depicting progress and development during sixty years of independence. The path of peace, non-violence and universal brotherhood shown by the India has become more relevant to the strife-torn world of today. The woman is depicted as goddess in the ancient Indian scriptures. The women have not only become a power on the earth but have explored the space too. This women force of India will become instrumental in making India a super power of the world.

वांग्ला नृत्य

वांग्ला नृत्य, वांग्ला उत्सव का एक भाग है जोकि गारो जनजाति के सभी त्यौहारों में से महत्वपूर्ण है। सामान्यतया यह उत्सव दो दिनों के लिए मनाया जाता है और कभी–कभी एक सप्ताह तक भी चलता है। इस उत्सव का उपयोग दुल्हन और दूल्हे के चयन के लिए भी किया जाता है। यह नृत्य उत्सव गारो समुदाय में अत्यधिक रंगारंग तथा शानदार होता है। उत्तर पूर्व अंचल सांस्कृतिक केंद्र दीमापुर के छात्र देशी वाद्य यंत्रों की लयबद्ध ध्वनि पर जोरदार ढंग से पैरों को बदलते हुए और हाथों तथा शरीर को सौम्य गति से हिलाते हुए वांग्ला नृत्य प्रस्तुत कर रहे हैं।

Wangala Dance

Wangala dance is a part of the Wangala festival, which is the most important of all the festivals of the Garos. It is generally celebrated for two days and sometimes continues for a week. This festival is also used as an occasion for selecting brides and bridegrooms. This dance festival is the most colourful and spectacular amongst the Garo community. To the tune of rhythmic sounds of native musical instruments, the students from North East Zone Cultural Centre, Dimapur are presenting the Wangala dance with vigorous shuffles of feet and gentle graceful movement of hands and bodies.

गौरव

इतिहास गवाह है कि जब–जब महिला सशक्तिकरण हुआ या उसे उचित अवसर प्राप्त हुआ है उसने अपने आपको सुनीता विलियम्स, सानिया मिर्जा, कल्पना चावला, इन्दिरा नूयी के रूप में प्रतिष्ठापित किया है। भारतीय महिलाओं ने भी भारत की एकता और सद्भाव को बनाए रखने के लिए वीरता और बहादुरी से अपना योगदान दिया है। गर्वनमेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंड्री स्कूल, त्रिलोकपुरी के बच्चे अपनी रंगारंग प्रस्तुति 'गौरव' के माध्यम से अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति कर रहे हैं।

Gaurav

History is witness; whenever woman has been empowered or got right opportunity, she has proved her worth and became Sunita Williams, Sania Mirza, Kalpana Chawala, Indra Nooyi etc. The Indian women have also contributed in building national unity harmony and zest for victory with their great courage and dedication. The students from Government Girls Secondary School, Trilokpuri, Delhi are presenting the theme of 'Gaurav' through their colourful presentation.

लाम्बडी नृत्य

आंध्र प्रदेश का एक प्रसिद्ध आदिवासी नृत्य लाम्बडी, 'सेंगालिस' और 'बंजारा' के नाम से भी जाना जाता है। यह माना जाता है कि इस नृत्य का जन्म राजस्थान में हुआ और राजा राणा प्रताप के काल के दौरान आंध्र प्रदेश में स्थापित हो गया। इस नृत्य में वेशभूषा अत्यधिक रंगबिरंगी होती है और यह शीशों के टुकड़ों तथा कौड़ियों से सुसज्जित होती है। नर्तक अपने आप को हाथी दांत की चूड़ियों और आभूषणों से सजाते हैं। लाम्बडियों द्वारा किए जाने वाला नृत्य ओजस्वी नहीं होता अपितु जब वे ढोल की थाप पर नृत्य करते हैं तो उसमें गति आ जाती है। जिस भाषा में गीत गाए जाते हैं वह भी उनकी लाम्बडी बोली से लिए गए हैं। उनके लोक गीत बड़े ही अर्थपूर्ण तथा मादक धुन के हैं। सामान्यतया पुरुष कलाकार 'दप्पू' के साथ ऑर्केस्ट्रा का साथ देते हैं तथा ऐसा करते समय लय के साथ महिला कलाकारों के साथ नाचते भी हैं। दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, तंजावूर के छात्र लाम्बडी नृत्य प्रस्तुत कर रहे हैं।

Lambadi Dance

'Lambadi' one of the famous tribal dances of Andhra Pradesh, is also known as 'Sengalis' and 'Banjaras'. The dance form, is stated, to have originated from Rajasthan and settled in Andhra Pradesh during the period of King Rana Pratap. In this dance the costumes are very colourful and are decorated with pieces of mirror and cowrie. The dancers decorate themselves with lot of ivory bangles and ornaments. The dance performed by Lambadis is not vigorous, but when they dance to the beat of the drums, it gains momentum. The language in which the songs are sung is derived from their own Lambadi dialect. They have very meaningful folk songs set to sensuous tunes. Generally, male artists give support of orchestra with 'Dappu' and also dance with female artists while giving the support of rhythm to the above. The students from South Zone Cultural Centre, Thanjavur are performing the Lambadi dance.

सरफरोशी की तमन्ना

"गणतंत्र दिवस मना रहे हैं, झण्डा ऊंचा करके ।
भारत माँ का इतिहास लिखा है, कलम लहू में भरके ।"

अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के लिए अपने प्राणों की आहूति देकर इतिहास बनाया तथा इतिहास में अपने नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखवाए । गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर राजकीय बालक वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल, पदम नगर, दिल्ली के विद्यार्थी अपनी प्रस्तुति "सरफरोशी की तमन्ना" के माध्यम से देशवासियों को यह दिखा रहे हैं कि किस तरह शहीदों ने अपने जीवन का बलिदान करके देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराया ।

गौड माड़िया नृत्य

छतीसगढ़ के अबूझमार (बस्तर) के गौड माड़िया द्वारा शादियों के अवसर पर प्रदर्शित किया जाने वाला खुशी तथा आह्वान का सजीव तथा ओजपूर्ण नृत्य गौड तथा बिसन कहलाता है। यह एक शिकार नृत्य है क्योंकि इसमें पशुओं की कलोल तथा झटका युक्त हरकतों का अनुकरण किया जाता है। तथापि, धार्मिक अनुष्ठान तथा गहरी पवित्रता की भावना नृत्य के संपूर्ण तालमेल को रेखांकित करती है। पुरुष नर्तक गवल के एक जोड़ा सींगों वाला रंगीन तथा विचित्र साज सिर पर पहनते हैं जिसमें मोर का लम्बा स्तवक तथा पक्षी की पंखों का ताज बना होता है और कौड़ियां इसके किनारे से लटक रही हैं जिनमें से चेहरे की हल्की–सी झलक दिखाई देती है। महिलाएं पंख वाली गोल चौड़ी–सा टोप पहनती हैं तथा अपने साधारण सफेद और लाल रंग के परिधानों में प्रतिसंतुलन के लिए अनेक गहनों का इस्तेमाल करती हैं। एक अंदरूनी घेरा बनाकर महिलाएं लयबद्ध ढंग से पैरों से नृत्य करती हैं तथा झुककर गोल दायरे में घूमती हैं। पुरुष बाहरी बड़ा गोला बनाते हैं तथा घेरा बनाकर गोल–गोल घूमते वक्त तीव्र गति से कदम ताल में परिवर्तन करते हुए जोर–जोर से ढोलक बजाते हैं। इस रचना की प्रस्तुति दक्षिण केंद्रीय अंचल सांस्कृति केंद्र, नागपुर के विद्यार्थियों द्वारा की जा रही है।

Sarfaroshi Ki Tamanna

'Gantantra Divas Mana Rahe Hain, Jhande Unche Karke.
Bharat Maa Ka Itihas Likha Hai, Kalam Lahoo Main Bharke'.

Many freedom fighters made history by sacrificing their lives for Indian Freedom Struggle and inscribed their names in golden letters in history. On the occasion of the Republic Day celebrations, the students of Govt. Boys Senior Secondary School, Padam Nagar, Delhi through their presentation "Sarfaroshi Ki Tamanna" are demonstrating their countrymen as to how the martyrs freed their country from the shackles of slavery sacrificing their lives.

Gour Maria Dance

The picturesque and vigorous dance of joy and invocation, performed on the occasion of marriages by Gour Maria of Abhujhmar (Bastar) in Chhatisgarh, is called Gour and Bison. It is a hunt dance as it imitates the frisking, jerking movements of animals. However, a sense of ritual and deep sanctity underlies the perfect synchronization of the dance. The male dancers wear a colourful and distinctive head gear with a pair of bison horns, crowned by a tall tuft of peacock and bird feathers and strings of 'Cowrie' shells hanging from its edge to lightly screen the face. The women wear a round flat hat stuck with feathers and use many ornaments to offset their simple white and red draperies. Forming an inner circle, the women thump their sticks on the ground rhythmically, stamping their feet, turning and bending and moving round. The men form a great outer circle, drumming loudly as they circle round and round turning and changing their steps in a fast tempo. The composition is being presented by the students of South Central Zone Cultural Centre, Nagpur.

Tara Art Printers Pvt. Ltd., New Delhi-2 Phone : 23378626